सृजन मञ्जूषा

(द्विमासिक पत्रिका)

वर्ष-२ अंक-१२ Title Code - CHHMUL00048 वि.सं. २०८२ मई-जून २०२५

पर्यावरण संरक्षण विशेषांक

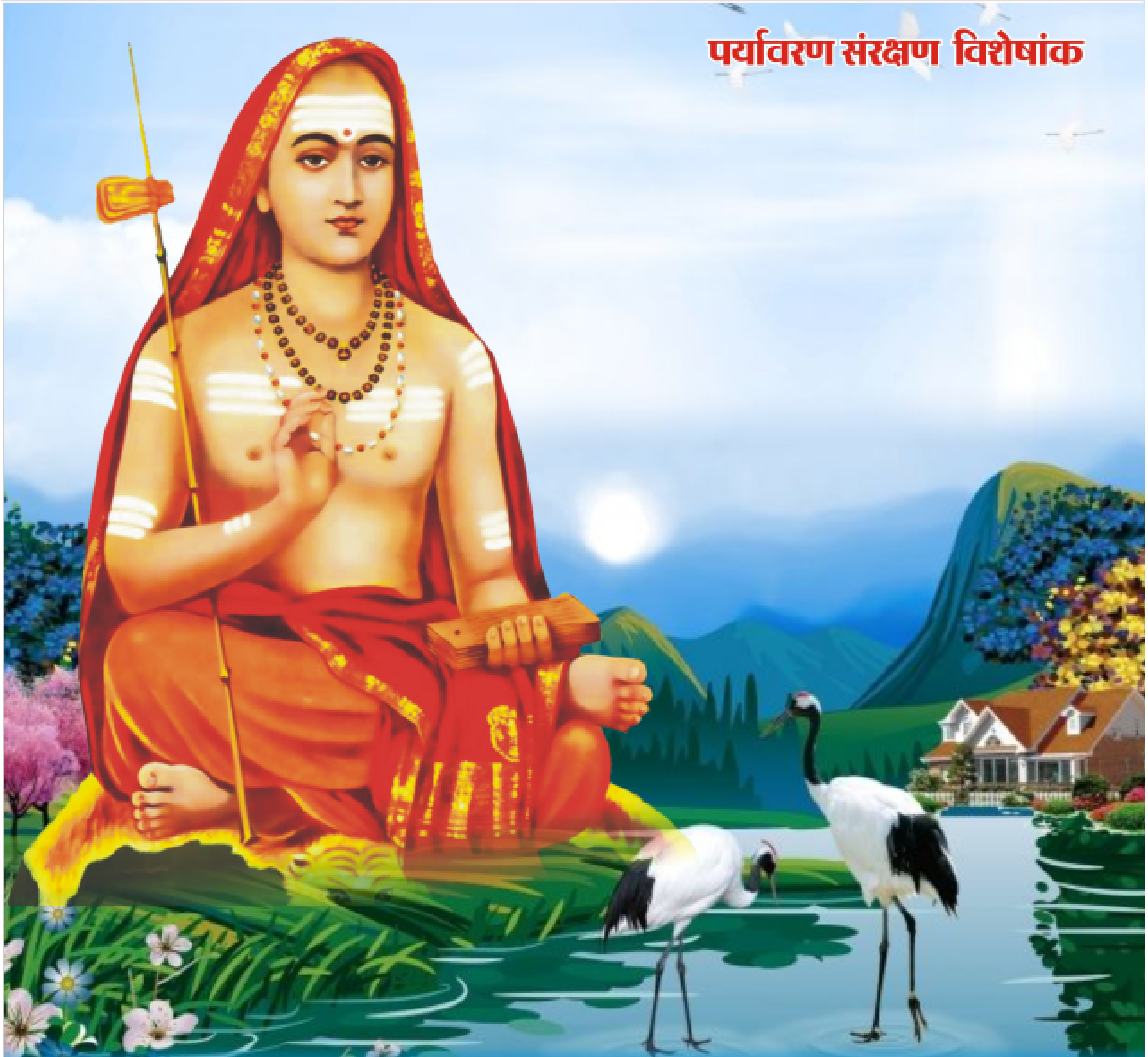

प्रकाशक :

सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़

आयुर्वेदिक कालेज के पीछे, सरस्वती विहार, रायपुर - ४९२०१० (छ.ग.)

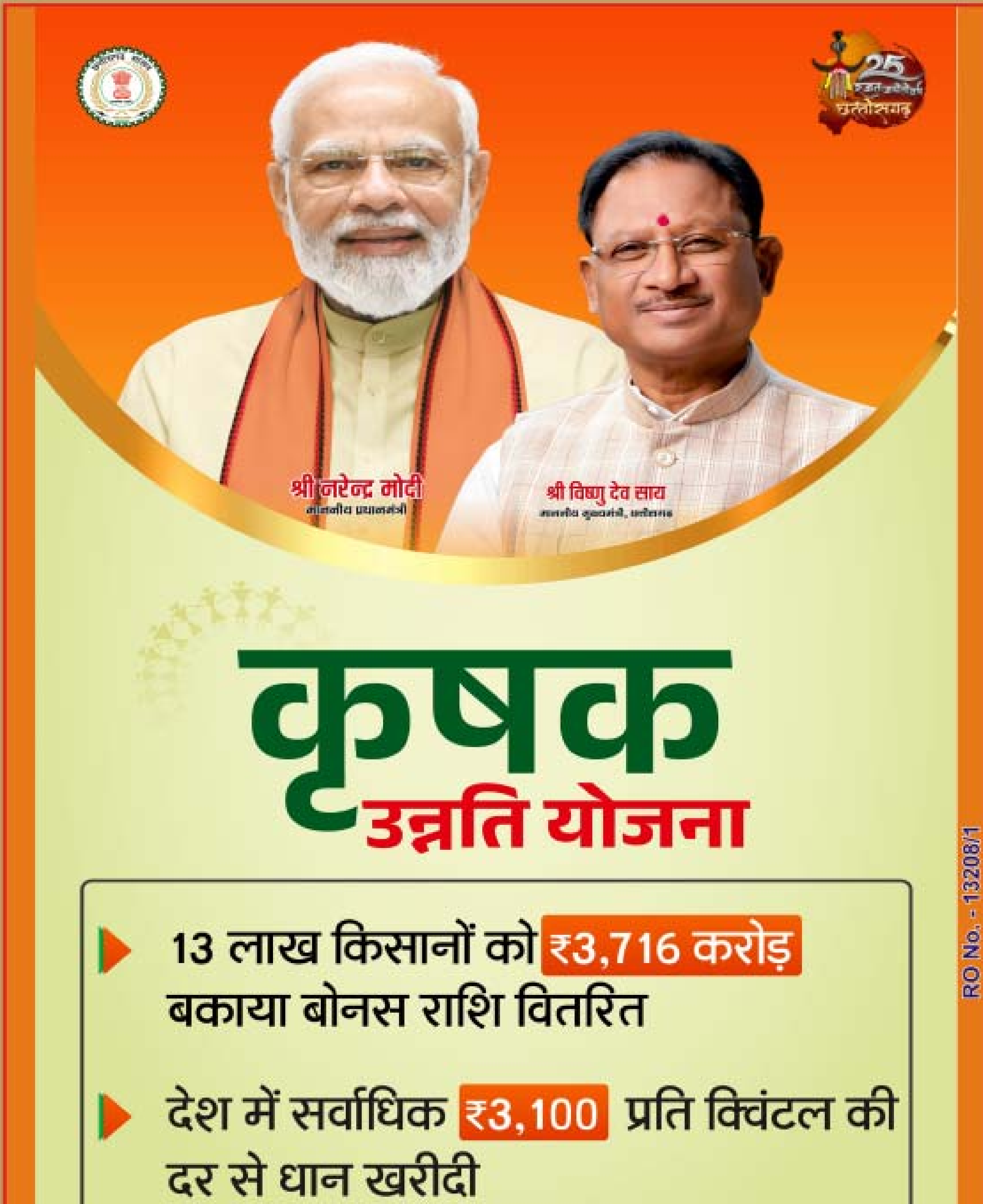
श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री
श्री विष्णु देव साय
माननीय मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़
कृषक
उन्नति योजना
13 लाख किसानों को ₹3,716 करोड़ बकाया बोनस राशि वितरित
देश में सर्वाधिक ₹3,100 प्रति क्विंटल की दर से धान खरीदी
सुशासन से समृद्धि की ओर
Visit us : ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO DPRChhattisgarh DPRChhattisgarh www.dprcg.gov.in
RO No. - 13208/1

सृजन मञ्जूषा

पर्यावरण संरक्षण विशेषांक

(द्विमासिक पत्रिका)

वर्ष - २ अंक -१२ Title Code - CHHMUL00048 विक्रम संवत् २०८२ मई-जून २०२५

संरक्षक
श्री सत्यनारायण अग्रवाल
(वरिष्ठ सदस्य, विद्या भारती मध्य क्षेत्र)
श्री भालचंद्र रावले
(विद्या भारती मध्य क्षेत्र)
श्री जुड़ावन सिंह ठाकुर
(अध्यक्ष, सरस्वती शिक्षा संस्थान (छ.ग.)
श्री विवेक सक्सेना
(प्रादेशिक सचिव, सरस्वती शिक्षा संस्थान छ.ग.)

परामर्शदाता
डॉ. देवनारायण साहू
(संगठन मंत्री, सरस्वती शिक्षा संस्थान छ.ग.)

संपादक
उदय रावले

संपादक मंडल
अशोक कुमार देवांगन
शिरीष दाते

विशेषांक संपादक मंडल
श्री शशांक शर्मा, श्री विकास शर्मा

कम्पोजिंग - कौशल साहू, मो.9753211816
मुद्रक - स्वास्तिक प्रिंटरी, पंचमुखी हनुमान मंदिर रोड, पवार सभा भवन के पास न्यू चंगोराभाठा, रायपुर, मो. - 9826446695

प्रकाशक
सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़
आयुर्वेदिक कालेज के पीछे, सरस्वती विहार, रायपुर ४९२०१० (छ.ग.)
दूरभाष : ०७७१-२२६२७७०,
२२६२३९३ २२६२३४२
web side : www.vidyabharticg.org
e-mail:vidyabharticg@gmail.com
e-mail-srijanmanjusha@gmail.com

मूल्य - 40 रुपये प्रति, 240/- वार्षिक

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	उदय रावले	02
2.	भूजल का उपयोग बैंक में जमा धनराशि की तरह करना होगा	रामेश्वर गुप्ता	03
3.	समाज का पर्यावरण पर प्रभाव समस्या और निदान	रेवाराम सोनी	04
4.	शरीर में बढ़ता माइक्रोप्लास्टिक	संकलित	07
5.	रसायनों ने प्लास्टिक को बनाया घातक	संकलित	10
6.	आद्य शंकराचार्य विचार और दर्शन	एम.एल. नत्थानी	13
7.	नवीन अखिल भारतीय कार्यकारिणी 2025		14
8.	रतनपुर के तरिया तब अउ अब	रश्मि रामेश्वर गुप्ता	15
9.	माँ का प्यार- निस्वार्थ और अनंत	डॉ. मंजिरी बक्षी	16
10.	सेवा और संस्कार से बस्ती हुई नशा मुक्त	चंद्रकुमार डडसेना	18
11.	मां	एम.एल. नत्थानी	19
12.	कविता	निश्चय बाजपेयी	19
13.	कर्तव्य का निर्वहन उपासना का सर्वोत्कृष्ट स्वरूप है	संकलित	20
14.	समत्वं योग उच्यते	संकलित	21
15.	दो पैसे के काम के लिए तीस साल की बलि	संकलित संकलित	21
16.	क्षमा करें और भूल जाएं	संकलित	22
17.	शुभ कार्य तत्काल करो	संकलित	22
18.	धन्वंतरि का ध्यान कर अपने स्वास्थ्य के प्रति रहें सचेष्ट	संकलित	23
19.	जब मन हो अशांत मंत्रों का जप और ध्यान करें	संकलित	23
20.	पांचो तत्वों को मिला है देवता का दर्जा	संकलित	24
21.	गरीब विद्वान व राजा भोज, बने भाई-भाई	संकलित	24
22.	प्रांतीय वैदिक गणित वर्ग		25
23.	समाचार		26

पत्रिका में छपे हुए लेख लेखकों के अपने विचार हैं।

सम्पादकीय

प्रिय पाठक गण,

जय जोहार,

पिछला अंक मा आप मन के प्यार और दुलारबर धन्यवाद ए दारी के अंक मा पर्यावरण विशेषांक हरे, हमर धरती माता ला आनंद देने वाला ओखर पर्यावरण हरय, दाई ला ओखर लइका मन स्वस्थ, सुंदर बाढ़त देखथे तभे ओला आनंद होथे। तब हमर धरती महतारी ला भी ओखर पेड़-पौधा, जीव-जंतु, पानी अउ प्रकाश, नदी-पहाड़, मनखे मन हा, जौन हा एक दूसर पर निर्भर है अपन-अपन काम (कर्तव्य) ला ठीक-ठीक निभाते, एक-दूसर के रक्षा करथे, सबला बढ़े के मौका मिलथे तब हमर धरती महतारी सुखी होथे। धरती में पानी के कमी, नदिया के सूखना, पहाड़ के हरियाली खतम होना जंगल के कम होना, बहुत से जानवर प्रजाति लुप्त होना, मनखे ला कष्ट होना अईसन सब बात हा हमर धरती माता ला कष्ट अउ तकलीफ देथे, ओखरे कोरा के लइका मन हा एक-दूसर के चिंता करे ला छोड़ के नष्ट करत देखथे तभे ओखर मन हा कतका व्याकुल होत होही जरा सोचौ, प्रकृति के जरूरत से ज्यादा दोहन करे से आज मनुष्य सुखी हो जाही पर आगे के पीढ़ी ला ये कर्जा पटाना भारी पड़ही अउ नही पटा सकही तो खुदे नष्ट हो जाही। अइसन सवाल आज खड़े होत हे- पेड़-पौधा ह न केवल मनखे बल्कि जन्तु-जानवर सब बर लाभकारी हे। आज जंगल कम होवत हे, ये खातिर जंगली जानवर बस्ती के डाहर अपन भूख-प्यास ला मिटाय बर आवत हे ये खातिर खतरा बाढ़ गे हे। पानी निरंतर कम होवत हे, जलस्तर नीचे जावत हे पीये के पानी मिलना कठीन होगे हे। खरीद के पीये बर लागत हे। पानी कम होए से छोटे पौधा, झाड़ी सूखत हे, प्रकृति के हवा ओखर से प्रदूषित होवत हे। ये जंगल-झाड़ी हा हवा ला सुद्ध करथे। उही ह कम होही त प्रदूषण बाढ़ही। धरती के तापमान मा वृद्धि होवत हे। हरेक जीव हा एक निश्चित तापमान ला सहन कर सकथे, ओखर ले ज्यादा होईस तो ओखर जिंदा रहना कठीन हो जाथे। प्रकृति में एक-दूसर से जोन संतुलन हे वो हा गड़बड़ाथे। सबके भुगतान हमी मन ला करना हे।

तब पर्यावरण के सुरक्षा बर पेड़ लगाना, पानी ला बचाय के ओला जमा करे के व्यवस्था बनाना होही। ओखर आवश्यक वतकाच उपयोग करे ला पड़ही। ओहा व्यर्थ मत जावै। पेड़ अउ वन बाढ़ही तो वर्षा ठीक होही। वर्षा ठीक होही तो खेती-किसानी ठीक होही। अन्न-जल ठीक मिलही तो मनखे मन हा स्वस्थ रिही। धन-धान्य सब बाढ़ही मनुष्य सुखी होही। ओखर बर आज जागना होही। मिहनत करना होही। पर्यावरण ला राखना होही। आशा हे आप मन एखर बर प्रयास करहू।

विद्या भारती के ये हा प्रशिक्षण महीना हावय। आचार्य-दीदी, प्रधानाचार्य-प्राचार्य सब्बो मन ला नवा पढ़ाई, नवा सिखई मा निपुण करे बर ओखर द्वारा अच्छा नागरिक निर्माण के काम हा सुग्घर होय बर ये प्रशिक्षण होथे। बर्तन ला मांजबो तो वोहा दमकते वैसने अपन काम ला जतका नवा-नवा तरीका सीखके करबे तो वो हा अउ अच्छा उज्जर होत जाही। इही भाव ला सोच के आचार्य-दीदी मन के प्रशिक्षण वर्ग लगथे। साधना अउ तपस्या के सुफल आगे मिलही। ऐसन आसा हमन रखथन।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरमया
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख
भाग् भवेत्।।

ये उपनिषद् के वाक्य ला मन में गुनके पर्यावरण संरक्षण बर हमन काम करबो। ये हा हमर कर्तब हावे।

उदय रावले
संपादक
सृजन मञ्जूषा

भूजल का उपयोग बैंक में जमा धनराशि की तरह करना होगा

- रामेश्वर गुप्ता
बिलासपुर

जल हमारे ग्रह पृथ्वी पर एक आवश्यक प्राकृतिक संसाधन है इसके बगैर जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती ।याद रखें पानी केवल बचा सकते हैं बना नहीं सकते,ये तो प्रकृति का एक उपहार है समस्त जीवों के लिए। साथियों हम सब बैंक में खाता खोलकर उसमें धनराशि जमा करते हैं जो कि हमारे दैनिक जीवन में और विषम परिस्थितियों में काम आता है, जब जरूरत हुई पैसा निकाल लिए और जब हाथ में पैसा आया तो बैंक में जमा कर दिये समय विशेष के लिए। ठीक यही सोच हमें अपने भूजल और संचित वर्षा जल हेतु रखना होगा। भूजल का स्तर बढ़िया बना रहे इसके लिए हमें निरंतर जल प्रबंधन को अपनाना होगा ।भूगर्भ में जल का स्तर तभी बना रह पायेगा जब हम वर्षा के जल को व्यवस्थित रूप से संचित रख सकें। घर के छतों के पानी को रेनवाटर हार्वेस्टिंग के माध्यम से भूगर्भ में भेजने की जुगत करें, तालाबों नदियों के पानी को रिजर्व बैंक मानकर खास समय में उपयोग में लाना होगा।

भूजल स्तर बदलने या कहें नीचे जाने के अनेक कारणों में से है तेज गति से बढ़ती जनसंख्या, लोग अधिक होंगें तो स्वाभाविक है पानी की खपत भी बढ़ेगी। खपत बढ़े ये तो ठीक है पर क्या जल संरक्षण भी बढ़े इस पर भी कुछ सोचा है आपने? नही,, तो फिर संचित जल में तेजी से कमी होगी ही ऊपर से औद्योगिकीकरण की बढ़ती रफ्तार। सबको पानी चाहिए, पर पानी लायें कहाँ से, अब जो प्रकृति प्रदत्त पानी है कम से कम उसे ही बचा लो। सुरसा के मुँह जैसे फैलते शहरों की आबादी ने पर्यावरण को तहस-नहस कर डाला है, पेडों वनों को काटकर कॉलोनियाँ बसाई जा रही हैं, सड़कें बनाई जा रही हैं, नये नये उद्योग लगाये जा रहे हैं तो फिर ग्लोबल वार्मिंग तो होगी ही न। ग्लोबल वार्मिंग से जलवायु परिवर्तन हो रहा है, ऋतु परिवर्तन में स्पष्ट बदलाव दिख रहा है तो सालों से जमे ग्लेशियर बढ़ती गर्मी से पिघल रहे हैं जिससे समुद्र का स्तर बढ़ने लगा और समुद्र किनारे बसे शहरों की जमीन सागर में समा रही है ।कहीं सूखा तो कहीं भयंकर बाढ़, ये सब हमारे ही द्वारा पैदा किये कर्मों के कारण से है।

यह तो तय बात है कि पृथ्वी का तीन चौथाई भाग जल से आच्छादित है शेष एक चौथाई भाग रहने लायक है ।अब इन तीन चौथाई जल से पीने योग्य स्वच्छ जल की मात्रा बहुत कम है तो फिर प्रश्न उठता है कि इसे सहेजें कैसे? सामान्य रूप से हमें जल बहते हुए नदी नालों से, तालाब, पोखर, झील, बांध में रुके हुए पानी से या फिर भूगर्भ के अंदर संचित भूजल से पीने योग्य पानी मिलता है। हमें जल संरक्षण की दिशा में पहला काम करना होगा। वर्षा जल को अधिक से अधिक संचित करने के तरीकों पर। स्टॉप डेम,चेक डेम,छोटे-छोटे तालाब,बांध आदि तरीकों से वर्षा के जल को भूगर्भ के अंदर भेजने से भूजल स्तर बना रहेगा। पेड़ और वन जल संरक्षण के सबसे कारगर उपाय हैं अधिक से अधिक पेडों को लगाकर उसे खड़ा करना होगा जिससे वर्षा जल इनके माध्यम से जमीन के अंदर और इनके लंबे जड़ों से भूगर्भ का पानी ऊपर भूजल स्तर पर काम आयेगा। फसल चक्र बदलते हुए और नये उपायों को अपनाते हुए कम पानी से या कम समय में तैयार होने वाले फसलों का उत्पादन करना होगा। बोतलबंद पानी भूजल का सबसे अधिक दोहन करती है इस संस्कृति को छोड़ना होगा। वर्षा जल को बड़े-बड़े बांधों में एकत्र कर पाइपलाइन के माध्यम से पेयजल आपूर्ति का उपाय अपनाने से पानी के व्यर्थ बहाव को रोका जा सकता है। पानी का पुनरुपयोग करने के उपायों पर काम करने की हम सबको जरूरत है। कुँओं और ट्यूबवेलों की गहराई निश्चित कर लगभग 400 फीट(120 मीटर) तक की ही अनुमति हो ।सिंचाई के लिए ड्रिप और स्प्रिंकलर प्रणालियों को अपनाने की आवश्यकता है। बूंद बूंद पानी अनमोल,सारे घरवालों को बोल। स्टेट वाटर ऑथोरिटी बनाकर जल संरक्षण का पुख्ता इंतजाम करने की दिशा में सरकारों को सोचना और करना होगा।

सरकार द्वारा दिसंबर 2019 से लागू अटल भूजल योजना जो अभी केवल सात राज्यों तक सीमित है उसे पूरे देश में लागू करने की जरूरत है। जल है तो कल है, इसे बचायें, संरक्षित रखें, अपने जमा खाता की भांति उपयोग करें तभी जलस्तर बना रह सकता है।

---00--

समाज का पर्यावरण पर प्रभाव समस्या और निदान

– रेवाराम सोनी
पूर्व सचिव /अध्यक्ष
ग्राम भारती रायपुर जिला छ.ग.)
मो. – 9425201377

पृथ्वी ही केवल ऐसा ग्रह है जहां जीवन संभव है तथा भगवान ने पर्यावरण की अदुभुत रचना इसलिए की है कि उनकी जीवधारी संततियाँ इस लोक पर निरोगी और सुखमय जीवन यापन कर सके मानव जनसंख्या और मानव गतिविधियों में निरंतर वृद्धि से वायु, जल, मृदा अन्य प्राकृतिक स्रोत प्रदूषित हो रहे हैं तथा प्राकृतिक संसाधन (स्रोत) उपयोग के अनुपयुक्त हो रहे हैं।

पर्यावरण और उसके अवयवों से अनापेक्षित दोहन से पर्यावरण असंतुलन से मानव स्वयं संकट में फंस गया है। मानव के साथ जलचर, नभचर भी संकट में पड़ गये हैं।

जीव विभिन्न प्रकार के वातावरण मृदा, जल और वायु में रहते हैं। विभिन्न प्रकार के जीव इस प्रतिवेशों में हिस्सा बंटाते है यही वातावरण इन जीवों का पर्यावरण है।

'परि+आवरण' घिरे हुए पर्यावरण भौतिक सामाजिक एवं जैविक कारकों की समष्टिगत ईकाई है जो जीवधारी एवं परतंत्रीय आबादी को प्रभावित करती है, एवं जीवन जीविता को निश्चित करती हैं इसमें निर्जीव वस्तुएं भी हो सकती है।

कुछ वर्षो से मनुष्य प्राकृतिक व्यवस्था पर छेड़–छाड़ कर रहा है। अति संवेदनशील पर्यावरणीय असंतुलन से मानव सभ्यता के अस्तित्व पर संकट आ गया है। हानिकारक पदार्थ रसायन ध्वनि या ऊर्जा हमारे प्राकृतिक वातावरण में प्रवेश करते है यही वायु, जल, मिट्टी, जीवों को और वातावरण को दूषित करते हैं जिससे स्वास्थ्य समस्याएं, पारिस्थितिकी तंत्र का नुकसान, जलवायु परिवर्तन सहित नकारात्मक परिणाम हो सकते हैं।

प्रदूषण के प्रकार–

1. वायु प्रदूषण –हानिकारक पदार्थ वातावरण में प्रवेश करते हैं, तब वायु प्रदूषण कहलाता है वायु पर्यावरण प्रदूषण के प्रभाव से मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण को हानि होती है।

वायु–प्रदूषण के घटक वाहन, उद्योगों के, संयत्र की प्रक्रियाएँ होती हैं। इसके प्रमुख घटक मोनोआक्साइड सल्फर डाइआक्साईड, नाइट्रोजन आक्साईड और पार्टिकुलेट मैटर है। फेफड़े की बीमारी, हृदय रोग का मुख्य कारक यही प्रदूषण है।

2. जल प्रदूषण – रासायनिक तत्व प्लास्टिक, तेल, औद्योगिक कचरा जल में मिलने पर जल प्रदूषण होता है। यह नदी–नाले, झीलों, समुद्रों, कुओं के जल को प्रदूषित कर जल जनित बीमारी पैदा करती है, समुद्री जीवों जलचरों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर होता है।

3. मृदा प्रदूषण – कृषि में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग से मिट्टी की उर्वरा शक्ति, गुणवत्ता खराब हो जाती है। इससे फसलों की उत्पादकता कम हो जाती है, भूमि की वास्तविक गुणवत्ता कम होने लगती है, औद्योगिक कचरा प्लास्टिक भी मृदा–प्रदूषण के प्रमुख कारण हैं।

4. ध्वनि प्रदूषण– वाहनों की बढ़ती संख्या, उद्योगों की बहुलता, शहरीकरण के कारण ध्वनि प्रदूषण का मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रबाव पड़ता है। जिससे श्रवण संबंधी समस्याएं, उच्च रक्तचाप और मानसिक तनाव उत्पन्न होता है।

5. प्रकाश प्रदूषण – शहरों में अत्यधिक असीमित प्रकाश/रोशनी) के कारण आकाशीय क्षेत्र को दृष्टिपात करना कठिन हो जाता है–

यह वन्यजीव, मानव जीवन के रात्रिचक्र को बाधित कर प्रकाश पर्यावरण को नुकसान पहुंचाता है।

Qair रिपोर्ट के अनुसार भारत पर्यावरण प्रदूषण के मामले में विश्व में तीसरे स्थान पर है और विश्व वायु गुणवत्ता रिपोर्ट 2023 के अनुसार दुनिया के 50 सबसे प्रदूषित शहरों में 42 शहर भारत के है। भारत की राजधानी दिल्ली में प्रतिवर्ष 11.5 प्रतिशत मृत्यु, प्रदूषण के कारण होती है।

स्वामी विवेकानंद जी का कथन कितना समीचीन तता सटीक है ''प्रकृति के क्रिया कलाप नियमों में आबद्ध है प्रकृति के नियमों को तोड़ते हो तो सृष्टि का अंत हो जायेगा।

संविधान के अनुच्छेद 46 पर्यावरण संरक्षण जीव की रक्षा का उत्तर दायित्व देश वहन करेगा ऐसी व्यवस्था की गई है। पर्यावरण संरक्षण प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है ऐसा उल्लेख किया गया है।

मृदा प्रदूषण, जल प्रदूषण समुद्रीजल प्रदूषण रोकथाम तथा जल संरक्षण की महती आवश्यकता है।

भारत में मनुष्यों की पहचान नदियों एवं उसके जल से है। उत्तर से दक्षिण पूर्व से पश्चिम नदियों का जाल बिछा है। इसके पश्चात् भी 2015-16 में देश के आठ राज्यों में भयंकर सूखा अल्प वर्षा का सामना करना पड़ा। संरक्षित जल भंडार $2^1/2$ गुणा कम हो गया था। जल संग्रहण की पारम्परिक व्यवस्थायें नष्ट और चौपट हो गई, पुरातन व्यवस्थाएं जल संकट के समय काम आती थी।

आधुनिकीकरण औद्योगीकरण के कारण वनों की अनियंत्रित कटाई हो रही है वृक्ष एवं जंगल मिट्टी एवं जल को संरक्षित रखते हैं। इन्हीं कारणों से जल संकट गहरा रहा है। जल संरक्षण के प्रभावी उपायों पर कार्य करने की आवश्यकता है वर्षा जल संग्रहण की आवश्यकता है वाटर हारवेस्टिंग वर्षा जल संग्रहण की आवश्यकता है। इस प्रयास में हम कुछ सफल भी हुए हैं जो परिणाम कारक सिद्ध हुए है।

राजस्थान में चौकाविधी अपनाया गया है ग्रामीण क्षेत्रों में बरसाती नदियों की सफाई की जा रही है पंजाब के कालीबेन को प्रवाह मान किया गया बुंदेल खंड में कुम्हेड़ी नदी जल से भरकर वरदान बन गई। नदियों के उद्धार के लिए भारत सरकार मनरेगा के तहत अनेक कार्य अपने हाथों में लिये है। झारखंड में भी सार्थक प्रयास हुआ है।

पर्यावरण विद् मानते है कि जल संरक्षण के लिए वन संरक्षण वनीकरण की आवश्यकता है चिपको आंदोलन के प्रणेता सुन्दर लाल बहुगुणा वनों का महत्व समझकर यह नारा दिया -

क्या है जंगल के उपकार,
मिट्टी पानी और बयार।
मिट्टी पानी और बयार,
ये है जीवन के आधार।।

श्रीगंगा यमुना की सफाई होना चाहिए, कुछ प्रयास गंगा की सफाई अभियान से प्राप्त हुआ है। प्रयाग राज, काशी बनारस में इसमें आंशिक सफलता प्राप्त हुई है।

3. पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 यह पर्यावरण के घटकों को संरक्षित करने का व्यापक प्रावधान करता है।

4. वन (संरक्षण) अधिनियम 1980 वनों की कटाई को रोकना वनों की रक्षा के लिए बनाया गया है।

5. प्लास्टिक कचरा प्रबंधन नियम 2016 इस नियम का उद्देश्य प्लास्टिक कचरे को नियंत्रित कर प्रदूषण कम करना है।

पर्यावरण वैदिक सनातन दर्शन

वैदिक संस्कृति सनातन धर्म प्रकृति की उपासक है, हिन्दू पुराणों धर्म ग्रंथों में इसके अनेक प्रमाण मिलते हैं। वायु को पवन देव, जल को वरुण देव, वनों में ईश्वर का वास, पर्वतों को देवताओं का आवास, नदियों को साक्षात्

देवी, धरा को माँ मातृत्व के रूप में मान्यता है तथा निरंतर इसकी उपासना भी करते हैं। पशु-पक्षी भी पर्यावरण के रक्षक संवाहक है, उनका भी देव तुल्य पूजन संवर्धन का कृत्य केवल वैदिक संस्कृति के उपासक ही करते हैं ऋग्वेद में वृक्ष, जल, आकाश, पर्यावरण की वेणिया, वन, पर्वत, हमारा संरक्षण करें ऐसी प्रार्थना की गई है। वनस्पति जगत का महत्व वैज्ञानिक और विज्ञान सम्मत है।

''यत ते भूमि विखनामिक्षिप्रं तदपि रोहतु।
मा ते मर्म विमृग्वरीया ते हृदयर्पितम्।।

(अर्थात् हे भूमि माता मैं जो तुम्हें हानि पहुँचाता हूँ शीघ्र उसकी क्षति पूर्ति हो जावे)

ऋग्वेद का शांति मंत्र के एक-एक अक्षर पर प्रकृति का बखान सृष्टि के समस्त कारकों में शांति बनाये रखने की कामना की गई है हिन्दू और सनातन, प्रकृति और पर्यावरण से गहरा नाता रहा है। ऋग्वेद का प्रथम मंत्र तो अग्नि को समर्पित है।

महर्षि यास्क ने पंच तत्वों को देवमानकर संपूर्ण पर्यावरण को स्वच्छ विस्तृत संतुलित रखने का भाव व्यक्त किया है। हमारी संस्कृति विश्व कल्याण की कल्पना को लेकर चलती है उसके विपरीत पश्चिम प्रकृति को सुखभोग का माध्यम मानता है। हमारे ऋषि-मुनि उच्च कोटि के वैज्ञानिक थे, वेही प्रकृति से अनुराग और प्रकृति ही हमारा जीवन शैली हो उसकी शिक्षा हमें दे गये हैं।

वृक्ष हमारे जीवन एवं धरती के पर्यावरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वृक्ष औषधीय गुणों के भंडार है। अथर्ववेद के अनुसार पांच पौधे सोम, कुश, ब्रीहि, जौ और भांग को पवित्र माना गया है। वृक्षों को पूजा जाना वैदिक धर्म की महत्वपूर्ण मान्यता है। वृक्ष लगाना पुण्य कार्य है।

सप्तपुरी काशी, मथुरा, अयोध्या, द्वारिका, पुरी, कांञ्ची, अवंतिका। पांच तीर्थ पुष्कर, कुरु, गया, हरिद्वार, प्रयाग। .09 नदिया गंगा, यमुना, सरस्वती, सिंधु, कावेरी, कृष्णा, नर्मदा, ब्रह्मपुत्र, विस्ता है, पवित्र वट- प्रयाग-अक्षयवट, मथुरा वंशीवट, गया- गयावट उज्जैन में सिद्धवट। अष्टवृक्ष-पीपल बड़ नीम इमली कैथविल्व आंवला आम उसी तरह 05 पवित्र सटोवर है जो प्रकृति का प्रतिनिधित्व करते हैं।

स्कन्ध पुराण में अद्भुत श्लोक है
अश्वत्थमेकम्, पिचुमन्द मेकम्,
न्यग्रोधमेकम् दश चिञ्चिणीकान्।
कपित्थ बिल्वाऽऽमलकत्रयंच पंञ्चा मुमुस्वा नर कन्न पश्येत्।।

अर्थात् पीपल नीमवट इमली कविट (कोठा) बिल्व आंवला आम- जो कोई इन वृक्षों के पौधों का रोपण करेगा देखभाल करेगा उसे नरक के दर्शन नहीं करना पड़ेगा अर्थात् व्याधि दुख नहीं होंगे।

भारत में प्रति व्यक्ति 428 वृक्षों की आवश्यकता है वर्तमान में हमारे पास मात्र 18 वृक्ष हैं।

पर्यावरण संरक्षण एवं प्रकृति के साथ सामंजस्य हमें रामायण और महाभारत काल से मिलता हैं- महाकवि तुलसीदास रामचरित मानस में लिखते हैं-

तुलसी तरुवर विविध सुहाये
कहीं सिय कही लखन लगाये
वट छाया वेदिका बनाई,
सिय निज पानि सरोज सुहाये
सफल फूल पग कदलि रसाला
रोपे बहुल कदम्ब रसाला।।

विश्व के सबसे बड़े सांस्कृतिक संगठन राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ पर्यावरण एवं प्रदूषण के विषय में पूर्ण गम्भीर होकर अपने पंच परिवर्तन कार्यक्रम में पर्यावरण संरक्षण पर विगत कई वर्षों से काम करना प्रारम्भ कर दिया है।

ग्राम विकास प्रकृति सेवा संस्थान के माध्यम से प्रकृति के संरक्षण संवर्धन पर निरंतर कार्य कर रहा है।

----00----

शरीर में बढ़ता माइक्रोप्लास्टिक

खून, माताओं के दूध, गर्भनाल से लेकर शरीर के अन्य अंगों में भी माइक्रोप्लास्टिक्स मिले हैं। नीदरलैंड के वैज्ञानिकों ने मांस के 8 में से 7 व मां के दूध के 25 में से 18 नमूनों में माइक्रोप्लास्टिक पाया है। समुद्री नमक और मछलियों के जरिये भी यह इनसानों के शरीर में पहुंच रहा है। वैज्ञानिकों ने 1997 से 2013 के जीच अमेरिका के पूर्वी तट पर मरने वाले लोगों के मस्तिष्क उतका के नमूनों का विश्लेषण किया था। ताजा शोध उसी का विस्तार है।

कैम्पेन ने कहा कि डिमेशिया में मस्तिष्क में रक्त अली 22 निकासी तंत्र क्षतिग्रस्त हो जाता है। बहुत संभव है कि डिभेर्देशिया के साथ सूजन वाली कोशिकाएं और ब्रेन टिश्यू मिलकर प्लास्टिक के लिए एक प्रकार का सिंक बना सकता है। इससे आशंका बढ़ गई है कि माइक्रोप्लास्टिक और न्यूरोडीजेनेरेटिव बीमारियों जैसे अल्जाइमर और पार्किंसंस के बीच गहरा संबंध हो सकता है। कैम्पेन ने कहा कि ताजा शोध में सभी नमूने फ्रंटल कॉर्टेक्स से लिए गए थे, जो आंखों के ऊपर और पीछे मस्तिष्क का क्षेत्र होता है। जांच में 200 नैनोमीटर या उससे कम माप के तीखे प्लास्टिक के टुकड़ों के गुच्छे मिले जो वायरस से ज्यादा बड़े नहीं थे। ये प्लास्टिक कण इतने छोटे हैं कि रक्त-मस्तिष्क अवरोध को पार करने के लिए पर्याप्त हैं।

आधे से अधिक अंगों तक पहुंचा

दो वर्ष पहले मलेशिया, ऑस्ट्रेलिया और इंडोनेशिया के शोध रिपोर्ट में कहा गया था कि मानव शरीर में प्लास्टिक के कण चातक तरीके से बढ़ रहे हैं। इसके अनुसार, हर हफ्ते औसतन लगभग 5 ग्राम प्लास्टिक मानव शरीर में पहुंच रहा है। कई मामले में यह मात्रा इससे भी अधिक है। चीन के बाद इंडोनेशिया सबसे अधिक प्लास्टिक प्रदूषण फैला रहा है। इंडोनेशिया के एयरलंग्गा विश्वविद्यालय के शोधकर्ता वेरिल हसन की मानें तो शरीर में माइक्रोप्लास्टिक पहुंचने का प्रमुख माध्यम समुद्री मछलियां हैं। 2050 तक समुद्र में पहुंचे प्लास्टिक का वजन मछलियों के कुल वजन से अधिक होगा। मलेशिया की साइंस यूनिवर्सिटी के अध्ययनकर्ता ली योंग का तो दावा है कि आधे से अधिक मानव अंगों में माइक्रोप्लास्टिक पहुंच चुका है। इससे कैंसर से लेकर शरीर के अंदरूनी अंग फेल होने का खतरा बढ़ रहा है।

ऑस्ट्रेलिया के यूनिवर्सिटी ऑफ वोलोंगोंग के वैज्ञानिकों ने बीते 20 वर्ष में माइक्रोप्लास्टिक पर प्रकाशित 7,000 अध्ययनों की समीक्षा की। इसमें भी चिंताजनक परिणाम सामने आए हैं। इसमें कहा गया है कि माइक्रोप्लास्टिक व्यापक रूप से न केवल फैल चुके हैं, बल्कि पृथ्वी और दूरस्थ हिस्सों में भी जमा हो रहे हैं। छोटे कीटों से लेकर जानवरों और मनुष्यों तक, हर स्तर पर इसके विषैले प्रभावों के सबूत मिले हैं। रॉयल मेलबोर्न इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी विश्वविद्यालय और हैनान विश्वविद्यालय के अध्ययन के अनुसार, माइक्रोप्लास्टिक के 12.5 प्रतिशत कण मछलियां भोजन समझ कर निगल जाती हैं। उत्तरी फुलमार के समुद्री पक्षियों की विष्ठा में 47 प्रतिशत तक माइक्रोप्लास्टिक पाए गए हैं। इससे प्रभाव से कछुए और अन्य समुद्री जीव भी प्रभावित हैं। जनरल एनवायरनमेंट इंटरनेशनल में प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार, अध्ययन में शामिल 80 प्रतिशत लोगों के रक्त में माइक्रोप्लास्टिक पाया गया है। यह मानव शरीर में फैल कर कई महत्वपूर्ण अंगों को नुकसान पहुंचा सकता है, जिसका सीधा असर दिमाग पर पड़ता है। वैज्ञानिकों ने इस बात पर चिंता जाहिर की है कि अगर स्थिति यही रही तो यह मानव शरीर की कोशिकाओं को भी नुकसान पहुंचा सकते हैं। इस शोध में 22 अलग-अलग लोगों के रक्त के नमूने लिए गए थे। अधिकतर लोगों के खून में पीईटी पाया गया, जो आमतौर पर पीने की बोतलों में पाया एक तिहाई मात्रा में पॉलीस्टाइनिन होता है, जिसका और अन्य उत्पादों की पैकेजिंग के लिए किया जाता 376 अलावा इसमें पॉलीइथीलिन भी पाया गया, जिसका प्रथम व्लास्टिक बैग बनाने में किया जाता है।

महासागरों में बढ़ा प्लास्टिक

प्लास्टिक कचरे से कुछ भी अछूता नहीं है। हालांकि, हवा, मिट्टी और पानी में माइक्रोप्लास्टिक कितनी मात्रा में मौजूद है, इसका पता लगाना तो कठिन है। लेकिन शोधकर्ताओं ने इसे मापने की कोशिश की है। 2020 के अध्ययन के अनुसार, महासागरों में हर वर्ष अनुमानतः 0.8 से 3 मिलियन टन माइक्रोप्लास्टिक कण पहुंचते हैं। हाल की एक रिपोर्ट के अनुसार भूमि और पर्यावरण में माइक्रोप्लास्टिक का रिसाव 10 से 40 मिलियन टन हो सकता है, जो महासागरों की तुलना में तीन से दस गुना अधिक है। 2040 तक पर्यावरण में यह रिसाव दो गुना हो सकता है। यहां तक कि अगर माइक्रोप्लास्टिक का प्रवाह रोक दिया जाए, तो भी बड़े प्लास्टिक का टूटना जारी रहेगा।

प्रशांत, अटलांटिक और हिंद महासागर में माइक्रोप्लास्टिक की मात्रा बहुत अधिक है। अटलांटिक महासागर में 200 मीटर गहराई में लगभग 210 लाख टन माइक्रोप्लास्टिक के कण पाए गए हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार, इस महासागर में 47 मिलियन टन तक प्लास्टिक अपशिष्ट हो सकता है। सूर्य की पराबैंगनी विकिरण के प्रभाव से समुद्र या किसी भी जल निकाय में प्लास्टिक के टुकड़े माइक्रोप्लास्टिक कण के रूप में बिखर जाते हैं। गर्म खाद्य पदार्थ को पॉलिथीन में डालने से या प्लास्टिक की बोतलों में बंद पानी के सूरज के लगातार संपर्क में रहने से माइक्रोप्लास्टिक सीधे पानी या खाद्य में मिल जाता है। माइक्रोबीड्स भी एक प्रकार के माइक्रोप्लास्टिक होते हैं, जिनका आकार एक मिलीमीटर से कम होता हैं। ये सौंदर्य प्रसाधन, व्यक्तिगत देखभाल उत्पादों और औद्योगिक प्रक्रियाओं से उत्पन्न होते हैं।

कितना घातक

कई अध्ययनों में इससे पाचन तंत्र और आंतों से लेकर कोशिकाओं तक को खतरा बताया गया है। फेसर, हृदय रोग, किडनी, पेट और लिवर के रोग, मोटापा, मां के गर्भ में मौजूद भ्रूण का विकास रुकने संबंधी दावे किए गए हैं। साइंस ऑफ द टोटल एनवायरनमेंट द्वारा हाल ही में प्रकाशित एक अध्ययन रिपोर्ट में निचले फेफड़े सहित शरीर के विभिन्न हिस्सों में मौजूद माइक्रोप्लास्टिक मिलने का दावा किया गया है। अध्ययन के दौरान वैज्ञानिकों ने 12 प्रकार के प्लास्टिक की पहचान की है। इसमें पॉलीप्रोपाइलीन और पॉलीथीन के साथ ही टेरेफ्थेलेट और राल भी शामिल हैं। आमतौर पर ये प्लास्टिक पैकेजिंग, बोतलों, कपड़ों, रस्सी और सुतली निर्माण में पाए जाते हैं। माइक्रोप्लास्टिक के सबसे खतरनाक स्रोतों में शहर की धूल, कपड़ा और टायर भी शामिल हैं। इस रिपोर्ट के अनुसार प्लास्टिक के कण लंबे समय में इनसान के फेफड़ों के ऊतकों को नुकसान पहुंचा सकते हैं, जिससे कैंसर, अस्थमा जैसी कई बीमारियां हो सकती हैं। एक अन्य अध्ययन के अनुसार, कपड़ा कारखानों में पॉलिएस्टर और नायलॉन फाइबर से निकलने वाले माइक्रोप्लास्टिक कणों के कारण वहां कार्यरत लोगों में खांसी, सांस फूलने और फेफड़ों की क्षमता कम होना जैसी बीमारियां देखी गई हैं।

विभिन्न प्रकार के प्लास्टिक व उनके उत्पाद जैसे पॉलीविनाइल क्लोराइड व पॉलीस्टायरीन कैंसरकारक होते हैं। माइक्रोप्लास्टिक के संचय से मानव शरीर की विखंडन प्रक्रियाएं प्रभावित होती हैं और आंतों का माइक्रोबायोम असंतुलित हो सकता है। ये प्रजनन में क्षमता में कमी, मानसिक विकार जैसी गंभीर बीमारियों का कारण बन सकते हैं। माइक्रोप्लास्टिक से ऑक्सीडेटिव तनाव (फ्री रेडिकल्स और एंटीऑक्सिडेंट्स के बीच असंतुलन जो कोशिकाओं को नुकसान पहुंचाता है), प्रतिरक्षा प्रतिक्रियाएं, जीनोटॉक्सिसिटी – कोशिका में आनुवांशिक नुकसान हो सकते हैं।

द लैंसेट में प्रकाशित एक अध्ययन के मुताबिक, माइक्रोप्लास्टिक के कारण पाचन तंत्र कमजोर होने के साथ लिवर संबंधी समस्याएं भी हो सकती हैं। रिपोर्ट के अनुसार, प्लास्टिक की प्रकृति न्यूरोटॉक्सिक होती है। इसका मतलब है कि ये हमारी सेल्स के कामकाज को प्रभावित कर सकते हैं और उन्हें मार भी सकते हैं। इससे कैंसर की आशंका भी बढ़ सकती है। जर्नल ऑफ नैनोबायोटेक्नोलॉजी की एक रिपोर्ट की मानें तो हाल के वर्षों में पॉलीस्टाइरीन किडनी में सूजन का बड़ा कारण है

और ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस भी बढ़ा रहा है। अगर लंबे समय यह स्थिति बनी रही तो किडनी संबंधी गंभीर बीमारियां होने की आशंका बढ़ जाती है, जो बाद में किडनी फेल होने का कारण बन सकती है।

कैसे लगेगी रोक

कृषि प्रणाली, विशेषकर बागवानी उई प्रकार के प्रदूषक पाए जाते हैं, जिनमें सूक्ष्म प्लास्तिमामिल हो चुके हैं। प्लास्टिक अपशिष्ट का प्रबंधन एक और समस्या है। वैश्विक स्तर पर 6300 मिलियन टन प्लास्टिक उत्पादों का उत्पादन किया जाता है, जिसमें से 75 प्रतिशत से अधिक को लैंडफिल में डाला जाता है। कृषि और बागवानी में प्लास्टिक मल्च या प्लास्टिक की चादर का उपयोग जल उपयोग दक्षता बढ़ाने और मिट्टी के तापमान को बनाए रखने के लिए किया जाता है। इस प्रक्रिया में प्लास्टिक के छोटे टुकड़े या सूक्ष्मप्लास्टिक मिट्टी में रह जाते हैं, जो मिट्टी के स्वास्थ्य के लिए खतरा बन जाते हैं। हाल ही में वैज्ञानिकों ने प्लास्टिक मल्च के उपयोग पर चेतावनी दी है। प्लास्टिक मल्च को धान, गेहूं और घास जैसे जैविक मल्च से बदला जा सकता है, जो प्लास्टिक के उपयोग को कम करेगा। प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने से कोटेड उर्वरकों और अन्य सिंथेटिक उत्पादों का उपयोग कम होगा।

प्लास्टिक कचरा हर साल बढ़ रहा है। 2060 तक इसके तीन गुना बढ़ने की संभावना है। इसके प्रबंधन में अगर सुधार नहीं हुआ तो यह मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण दोनों के लिए गंभीर खतरा बन सकता है। 2019 के आंकड़ों को देखें तो वैश्विक स्तर पर हर साल लगभग 35.3 करोड़ टन प्लास्टिक कचरा पैदा हो रहा है, जो अगले 38 वर्ष में बढ़कर 101.4 करोड़ टन से अधिक हो जाएगा। यह जानकारी आर्थिक सहयोग और विकास संगठन द्वारा हाल में जारी रिपोर्ट %ग्लोबल प्लास्टिक आउटलुक: पॉलिसी सिनेरियोज टू 2060% में सामने आई है। इसमें कहा गया है कि प्लास्टिक कचरे का लगभग आधा हिस्सा सीधे लैंडफिल में डंप किया जा रहा है, जबकि करीब 20 प्रतिशत से भी कम को पुनर्चक्रित किया जाता है। नतीजन देश-दुनिया में तेजी से इससे जुड़ा कचरा अपने पैर पसार रहा है। यहां तक कि दुनिया के सुदूर निर्जन इलाकों में भी प्लास्टिक की मौजूदगी के सबूत मिले हैं, जहां इनसानी विकास की छाया नहीं पड़ी है।

इसलिए अनावश्यक माइक्रोप्लास्टिक पैकेजिंग को कम करना आवश्यक है। इसके लिए जागरुऊन बढ़ानी होगी। प्लास्टिक कचरे के संग्रहण प्रणाली में और उचित लैंडफिल बनाना भी आवश्यक है। पेस्ड और बायोडिग्रेडेबल प्लास्टिक के उपयोग के नीति-निर्माण व उनका अनुपालन भी आवश्यक है। प्लास्टिक मल्च को धान,

गेहूं, और घास जैसी जैविक मल्च से बदला जा सकता है, जो प्लास्टिक के उपयोग को कम करेगा। प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने से कोटेड उर्वरकों और अन्य सिंथेटिक उत्पादों का उपयोग कम या बंद होना चाहिए।

माइक्रोप्लास्टिक प्रदूषण मानव क्रियाओं और निर्णयों का परिणाम है। हमने इस समस्या को उत्पन्न किया और अब हमें इसका समाधान भी खोजना है। कुछ देशों ने इसे नियंत्रित करने वाले कानून लागू किए हैं। प्लास्टिक को फिर से डिजाइन करने की आवश्यकता है ताकि माइक्रोप्लास्टिक का उत्सर्जन न हो। वैज्ञानिक अनुसंधान और नवोन्मेषी तकनीकों के माध्यम से हम सूक्ष्म प्लास्टिक के प्रभावों को नियंत्रित कर सकते हैं, जिससे न केवल पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा होगी, बल्कि मानव स्वास्थ्य पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। इस दिशा में ठोस प्रयास और सामूहिक कार्रवाई से हम एक स्वस्थ और स्वच्छ भविष्य की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। प्लास्टिक की बोतलों और उत्पादों से दूरी बनाने के साथ चाय या अन्य खाद्य पदार्थ को पॉलिथीन में रखने से भी बचना चाहिए। अपनी आदतों में बदलाव कर हम कुछ हद तक माइक्रोप्लास्टिक के खतरे से बच सकते हैं।

– साप्ताहिक पत्रिका पाञ्चजन्य से साभार

---00---

रसायनों ने प्लास्टिक को बनाया घातक

प्लास्टिक पेट्रोलियम और अन्य रसायनों से बना एक कृत्रिम पदार्थ है। 98 प्रतिशत प्लास्टिक जीवाश्म से उत्पन्न होने वाले कोयले, तेल और गैस से बनता है। प्लास्टिक को विभिन्न गुण जैसे रंग, मजबूती, मुड़ने की क्षमता देने के लिए विभिन्न प्रकार के हानिकारक रसायन मिलाए जाते हैं।

प्लास्टिक उद्योग में लगभग 16,000 तरह के रसायन प्रयुक्त होते हैं, जिनमें 4200 बहुत हानिकारक होते हैं। ये प्रतिरक्षा प्रणाली, मस्तिष्क, नसों, रक्त वाहिनियों और हॉर्मोन सिस्टम को प्रभावित करते हैं। प्लास्टिक ने आधुनिक मानव सभ्यता के विकास के कई क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इनमें चिकित्सा, इलेक्ट्रॉनिक, संचार, भोजन पैकेजिंग सहित रोजमर्रा की अन्य वस्तुएं भी शामिल हैं। इसे नष्ट होने में सैकड़ों वर्ष लग जाते हैं।

बीते 50 वर्ष में प्लास्टिक का चलन तेजी से बढ़ा है। विश्व की कोई जगह ऐसी नहीं बची जो प्लास्टिक से अछूती हो, माउंट एवेरेस्ट से लेकर समुद्र की अतल गहराई तक, विश्व के ग्रामीण परिवेश, नगरों, महानगरों से लेकर घने जंगलों तक, सब जगह प्लास्टिक पसरा हुआ है। वर्ल्ड वाइल्ड लाइफ पोंडा के एक अध्ययन के अनुसार, हम लगभग 5 ग्राम प्लास्टिक प्रति सप्ताह खा रहे है, जो कि एक क्रेडिट कार्ड के वजन के बराबर है। लगभग 22,000,000 माइक्रो और नैनो प्लास्टिक के कण हमारे फेफड़ों में प्रतिवर्ष सांस के द्वारा प्रवेश करते हैं।

अभी 2024 में नेचर मेडिकल जर्नल में प्रकाशित रिपोर्ट में मानव मस्तिष्क में एक चम्मच जितना प्लास्टिक मिलने की बात कही गई है। यह मरिचक के जिन का लगभग 0.5 प्रतिशत है। अमेरिका के ईस्ट कोस्ट में हुए इस शोध में पत्ता 2024 तक लगातार प्लास्टिक की मात्रा बढ़ रही है। व मस्तिष्क में 1997 से नेनामीटर से लेकर 500 माइक्रोमीटर तक के प्लास्टिक कण मिले। 2016 में लिस्टिक मस्तिष्क में था, वह 2024 तक डेढ़ गुना हो गया। पर्यावरण में यह जिस अनुराव बढ़ रहा है, उसी अनुपात में शरीर में बढ़ रहा है। मस्तिष्क में जो माइक्रोप्लास्टिक मिला, उसमें लगभग 75 प्रतिशत पॉलीइथीलिन था, जो प्लास्टिक की थैलियों, भोजन और पेय पदार्थों की पैकिंग में प्रयुक्त होने वाले प्लास्टिक का

मूल घटक होता है।

पोस्ट्मॉर्टम रिपोर्ट से यह भी पता चला कि व्यक्ति की मृत्यु के समय आयु, लिंग, रंग, जाति और देश के भिन्न होने पर भी इसमें कुछ फर्क नहीं आया। डिमेशिया (बढ़ती उम्र के साथ भूलने की बीमारी) से पीड़ति लोगों के मस्तिष्क में प्लास्टिक सामान्य व्यक्ति से 3 से 10 गुना ज्यादा था। हालांकि, यह स्पष्ट नहीं है कि मस्तिष्क में प्लास्टिक के कारण उन्हें यह बीमारी हुई या यह पहले से ही उनके मस्तिष्क में जमा था। ध्यान देने वाली बात है कि मानव मस्तिष्क एक बहुत नाजुक अंग है। इसमें %ब्लड–ब्रेन वैरियर% होता है, जो खून में मौजूद नुकसानदेह कण और कीटाणु को मस्तिष्क तक नहीं जाने देता है। लेकिन प्लास्टिक के माइक्रो और नैनो कण इस %ब्लड–ब्रेन वैरियर% को भी पार कर जाते हैं। न्यू इंग्लैंड जर्नल ऑफ मेडिसिन ने भी 304 मरीजों पर की गई एक शोध रिपोर्ट प्रकाशित की थी।

इसमें मस्तिष्क को रक्त पहुंचाने वाली मुख्य धमनी केरोटिड आर्टरी में रक्त प्रवाह अवरुद्ध करने वाले प्लैक की जांच की गई थी। इसमें 150 मरीजों की धमनियों में पॉलीइथीलिन और 31 में पॉलीविनाइल क्लोराइड के छोटे–छोटे टुकड़े मिले थे। इनमें इन्फ्लेमेशन भी पाया गया। यानी शरीर इन प्लास्टिक के टुकड़ों को बाहरी मानकर उनसे लड़ रहा था। जिन 257 मरीजों के प्लैक निकाल दिए गए थे, उन्हें 34 महीने तक निगरानी में रखा गया था। इसमें पता चला कि जिनके प्लैक में प्लास्टिक था, उनके लकवा होने, हृदयाघात या अन्य कारण से मृत्यु होने की दर 4.5 गुना अधिक थी। प्लास्टिक से सबसे अधिक प्रभावित गर्भस्थ एवं नवजात शिशु होते हैं। इससे बच्चों के समय पूर्व जन्म, जन्म के समय कम वजन, मृत शिशु का जन्म, जन्मजात जननांग, हृदय आदि बीमारियां होने का खतरा भी काफी होता है। इटली में 2020 में किए गए प्रयोगों में प्लसेंटा (गर्भस्थ शिशु और मां, जिस नाल द्वारा जुड़ते हैं) में भी पाया गया। इसमें मां के दूध के 34 नमूने लिए गए थे, जिनमें 75 प्रतिशत में प्लास्टिक मिला था। विशेष रूप से प्लास्टिक की बोतल से दूध पीने वाले नवजात शिशुओं के मल में वयस्कों की तुलना में 10 गुना अधिक प्लास्टिक पाया गया। एक सामान्य बुद्धि से भी यह समझा जा सकता है कि बड़ों की तुलना में इससे बच्चे अधिक प्रभावित होंगे, क्योंकि उनका रोग प्रतिरोधात्मक तंत्र अपेक्षाकृत कमजोर होता है।

प्लास्टिक कण पॉलीइथीलिन पेय पदार्थों की बोतलें बनाने में प्रयुक्त होता है। वहीं, पॉलीएसटीरिन खाद्य पदार्थों की पैकेजिंग में प्रयुक्त होता है। इन दोनों के अंश मानव रक्त के नमूनों में मिले हैं। प्लास्टिक के यही कण बोन मैरो में भी पाए गए। रक्त और बोन मैरो तेजी से बनते और नष्ट होते हैं। साथ ही, शरीर की रोग प्रतिरोधात्मक शक्ति का मुख्य हिस्सा होते हैं। प्लास्टिक शरीर में कोशिका के स्तर पर नुकसान पहुंचाता है, जो रोग प्रतिरोधी शरीर में गने वाले विभिन्न कैंसर से भी अचाव करती है। लेकिन प्लास्टिक जमा होने के कारण यह कमजोर हो जाती है। हृदय और इसकी मुख्य धमनियों में, विशेषकर जिन लोगों की धमनियां चर्बी जमा होने से अवरुघ होने लगती है, उसमें भी प्लास्टिक के कण पाए गए हैं। चूहों पर जब प्रयोग किया गया तो पता चला कि प्लास्टिक के कारण उन्हें हृदयाघात आया। चूहों की कैपिलरीज मानव की कैपिलेरीज से छोटी होती है।

प्लास्टिक के कण अंडकोश और लिंग में भी मिले हैं। पिछले 40 वर्ष में सामान्य वीर्य में शुक्राणुओं की संख्या लगातार घट रही है। इसका महत्वपूर्ण कारण बदलती जीवनशैली के साथ टेस्टिस तक माइक्रोप्लास्टिक का पहुंचना भी हो सकता है। टेस्टिस शुक्राणुओं को जब बनाती है तो क्रोमोजोम की संख्या मानव की दूसरी कोशिकाओं से आधी रह जाती है (23 क्रोमोजोम, जबकि सामान्य कोशिका में 46 क्रोमोजोम होते हैं)। ऐसा इसलिए

होता है कि आधे क्रोमोजोम माता से आते हैं। क्रोमोजोम की आधी संख्या के कारण शुक्राणु शरीर के प्रतिरक्षा तंत्र के लिए %बाहरी% हो जाते हैं, इसलिए शरीर का प्रतिरक्षा तंत्र उन्हें खत्म करने लग जाता है। %ब्लड-टेस्टिस बैरियर% के कारण इससे बचाता है। इसे हमारा प्रतिरक्षा तंत्र भी भेद नहीं पाता है। लेकिन प्लास्टिक इस ब्लड-टेस्टिस बैरियर को भी बेकार कर देता है। नपुंसकता के कारण जिन लोगों में ऑपरेशन कर पिनाइल इम्प्लांट लगाना पड़ा और जब लिंग के ऊतकों की जांच की गई तो उसमें भी प्लास्टिक मिला।

मिंडेरो-मोनाको आयोग ने प्लास्टिक के मानव स्वास्थ्य पर पड़ने वाले असर पर काफी शोध किया है। इसके अनुसार, कोयला खदानों में काम करने वाले लोगों को फेफड़े के कैंसर, फेफड़े व सांस संबंधी बीमारी अधिक होते हैं। प्लास्टिक बनाने वाले, इसे पुनर्चक्रित करने वाले, प्लास्टिक के कपड़े बनाने वाले कर्मियों में ब्लड कैंसर, लिम्फोमा, स्तन कैंसर, ब्रेन कैंसर, मूत्राशय का कैंसर, हृदयाघात, मस्तिष्क और नसों की बीमारी ज्यादा होती है। वहीं, प्लास्टिक फैक्टरियों के पास स्थित कॉलोनी में समय पूर्व प्रसव, शिशु विकास कम होना, ब्लड कैंसर, मानसिक और फेफड़ों की बीमारी ज्यादा होती है। प्लास्टिक में मिले हुए रसायन हॉर्मोन सिस्टम को बिगाड़ देते हैं। रिपोर्ट में प्लास्टिक के दुप्रभावों को रेखांकित करते हुए बताया गया है कि यह सभी इनसानों को समान तरीके से प्रभावित नहीं करता, बल्कि कमजोर, गरीव, बच्चे, महिलाएं, वीमार व विश्व के दक्षिण हिस्से में रहने वाले लोगों को अधिक नुकसान पहुंचाता है। संयुक्त राष्ट्र के मुताबिक में हर साल इनसान 43 करोड़ मीट्रिक टन दुनिया रहा है। इसमें दो तिहाई प्लास्टिक जल्द ही करत न जाता है, जो नष्ट नहीं होता।

प्लास्टिक से होने वाले नुकसानों के वारे में जानकारी अभी भी कम है। इसलिए अभी स्पष्ट रूप से नहीं कहा जा सकता कि यह किस-किस तरह से पर्यावरण और शरीर को नुकसान पहुंचाता है। इसलिए सिंगल यूज प्लास्टिक के इस्तेमाल पर समय रहते रोक नहीं लगाया गया, तो स्थिति विस्फोटक हो सकती है। विश्व के सबसे बड़े सामाजिक संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपने शताब्दी वर्ष में पंच परिवर्तन में पर्यावरण को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। संघ की प्रेरणा से बीते एक दशक से विभिन्न समाज के लोग अपने सार्वजनिक व मांगलिक कार्यक्रमों में प्लास्टिक या डिस्पोजेबल वस्तुओं का उपयोग नहीं कर रहे हैं। प्रयागराज में हाल ही में सम्पन्न महाकुंभ में भी संघ की इसी प्रेरणा से शून्य बजट वाला विश्व का सबसे बड़ा अभियान %एक थाली, एक थैला% जनभागीदारी से सफल बनाया गया गया। इस अभियान से 29,000 टन अपशिष्ट कम हुआ, जिससे 140 करोड़ रुपये की बचत हुई। साथ ही महाकुंभ में आने वाले 66 करोड़ यात्रियों के माध्यम से समूचे भारत में पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए डिस्पोजेबल का उपयोग बंद करने संबंधी जागरूकता आई है।

- साप्ताहिक पत्रिका पाञ्चजन्य से साभार

आद्य शंकराचार्य विचार और दर्शन

एम.एल. नत्थानी
(कवि,लेखक, शिक्षाविद, समीक्षक, कंटेंट राईटर)
रायपुर, छत्तीसगढ ।
मोबाइल - 9893333786

वस्तुतः - सनातन धर्म का आधार ही भारतीय ज्ञान परंपरा का प्राचीन इतिहास रहा है । इसी अनुकरण में हमारे ऋषि - मुनियों ने वैदिक काल से पूर्व हीसामाजिक समरसता और धार्मिक महत्व के प्रतीकों को पूरे देश में प्रतिष्ठित किया है । आद्य शंकराचार्य ने सर्वप्रथम भारतीय समाज की आधारभूत संरचना के अनुरूप देश में चार धाम को धार्मिक एंव आध्यात्मिक दर्शन के संदर्भ में प्रतिस्थापित किया था ।

जीवन परिचय -आद्य शंकराचार्य का जन्म 788

ईस्वी में वैशाख माह में शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथी पर हुआ था । मान्यता है कि, आठ साल की आयु में उन्होंने सभी वेदों का अध्ययन कर, गहन ज्ञान प्राप्त कर लिया था । इनका जन्म दक्षिण भारत के एक नंबूदरी ब्राह्मण वंश में हुआ था ।

देश में सांस्कृतिक एकता की पहल -आद्य शंकराचार्य ने पूरे भारत की यात्राएं की थी और चारों दशाओं में चार पीठों की सथापना की थी, जो कि अब प्रसिद्ध चार धाम हैं । भारत की सांस्कृतिक एंव आध्यात्मिक एकता के लिए आद्य शंकराचार्य ने प्रचीन काल में ही विशेष संरचना और व्यवस्था स्थापित की थी । उन्होंने गोवर्धन पुरी मठ (जगन्नाथ पुरी) श्रृंगेरी पीठ (रामेश्वरम) शारदा मठ (द्वारिका) एंव ज्योतिर्मठ बद्रीनाथ धाम की स्थापना की थी । जिससे भारत चारों दिशाओं में आध्यात्मिक और सांस्कृतिक रूप से मजबूत होकर एकता के सूत्र में बंध सके ।

धर्म और संस्कृति की रक्षा -आद्य शंकराचार्य ने मूलतः दशनामी सन्यासी अखाड़ों को देश की सांस्कृतिक रक्षा के लिए विभिन्न विद्वत श्रेणियों में विभाजित कर उनके नामों के अनुसार दायित्व प्रदान किया गया था । जैसे कि, वन,अरण्य, पुरी,भारती,सरस्वती, गिरी,पर्वत, तीर्थ, सागर, एंव आश्रम शब्दों और उपमाओं के अनुसार ही कर्त्तव्य पथ पर चलकर धर्म रक्षार्थ निर्वहन किए गए हैं । यही भारतीय विचार और दर्शन का सामाजिक एंव आध्यात्मिक संरचना का आधारभूत स्तंभ है ।

निष्कर्ष -आद्य शंकराचार्य ने भारतीय इतिहास, सामाजिक और सांस्कृतिक धरोहर को अक्षुण्ण रखने के लिए पूरे भारत में एक अद्भुत अलख जगाने का स्तुत्य और सराहनीय जन चेतना के माध्यम से वैचारिक और दार्शनिक महत्व को ही रेखांकित किया है । वस्तुतः यही भारत की ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की वैश्विक अवधारणा आज के आधुनिक समाज को सदैव मानवीय एंव नैतिक मूल्यों के प्रति भी संदेश प्रदान करता है ।

----00---

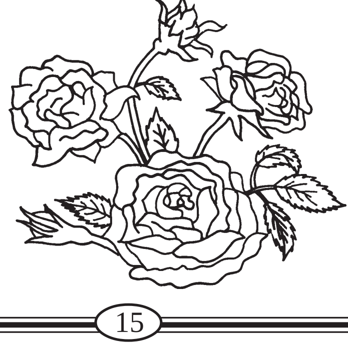

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान
नवीन अखिल भारतीय कार्यकारिणी 2025

क्र.	नाम	दायित्व	Mobile	Email Id	स्थान
1.	श्री ब्रहमदेव जी शर्मा	संरक्षक	9810096922		लखनऊ
2.	श्री रवीन्द्र कान्हेरे	अध्यक्ष	9425013315	gmail.com	भोपाल
3.	श्री दुसी रामकृष्ण राव	उपाध्यक्ष	9949058932	dusiramakrishna.gmail.com	विशाखापट्टनम
4.	श्री अवनीश मटनागर	उपाध्यक्ष	9412674930	avnishbetu@gmail.com	दिल्ली
5.	श्री राजेन्द्र प्रसाद खेतान	उपाध्यक्ष	9810090847	rpk@ral.co.in	दिल्ली
6.	डॉ शकर राय	उपाध्यक्ष	9436126644		त्रिपुरा
7.	श्रीमती साधना भण्डारी	उपाध्यक्ष	9426144116		गुजरात
8.	श्री गोविन्द चन्द्र महन्त	संगठन मंत्री	9437027758	gmohanra03@gmail.com	दिल्ली
9.	श्री यतीन्द्र कुमार शर्मा	सह संगठन मंत्री	9161192000	yksharmavb@gmail.com	लखनऊ
10.	श्री श्रीराम आरावकर	सह संगठन मंत्री	9425116793		रायपुर
11.	श्री रोहित वासवानी	कोषाध्यक्ष	9212005163		दिल्ली
12.	श्री देशराज शर्मा	महामंत्री	94780–00698	deshrajsharmaz@gmail.com	दिल्ली
13.	डॉ. मधुश्री संजीव सावजी	मंत्री	9822029332	drmadnushreesaj yahoo.co.in	संभाजी नगर
14.	श्री ब्रह्माजी राव	मंत्री	9864053454	brahmajirao65@gmail.com	राँची, झारखंड
15.	श्री कमल किशोर सिन्हा	मंत्री	9431418676		जमालपुर, बिहार
16.	श्री शिव प्रसाद जी	मंत्री	9414065314	Sprashard2010@gmail.com	जयपुर, राजस्थान
17.	डी. राजश्री वैद्य	मंत्री	8839919580	rajshreevd@gmail.com	बिदिशा
18.	श्रीमती नन्दिनी लक्ष्मीकान्त	सह मंत्री	9620397265	nandini.teacher@gmail.com	बंगलूरू
19.	सुश्री पवित्रा दहाल	सह मंत्री	9002755037	pabilodahal1968gmail.com	गंगतोक, सिक्किम
20.	प्रो. हजारी लाल बेरबा	सह मंत्री	9414844819		जयपुर, राजस्थान
21.	श्रीमती गायत्री वाहिनीपति	सह मंत्री	8144189576		जयपुर, ओड़ीशा
22.	डॉ. बाबली चौधरी	सह मंत्री	98640 52319	babhchoudhury2010@gmail.com	गुवाहाटी, असम
23.	श्री जे.एम. काशीपति	कार्य. सदस्य	9650339090	kashipathijm@yahoo.in	गुजरात, कर्णावती
24.	श्री रवीन्द्र चमडिया	कार्यकारिणी सदस्य	9831278978	chamarianhin lynpark.com	कोलकाता
25.	डी. ललित बिहारी गोस्वामी	कार्यकारिणी सदस्य	9818068110	Ibgvidyabharti@gmail.com	दिल्ली
26.	श्री आर रवीन्द्रन्	कार्यकारिणी सदस्य	9841825125	auditorravindranj@gmail.com	चैन्नै
27.	प्रो. कीर्ति पाण्डेय	कार्यकारिणी सदस्य	9415319050	drkirt pandey89@gmail.com	प्रयागराज
28.	श्री ज्वाला प्रसाद	कार्यकारिणी सदस्य	80104 02626	jwalaprasad86@gmail.com	दिल्ली
29.	सुश्री रेखा चुडासमा	कार्यकारिणी सदस्य	9427614955		जबलपुर, म0 प्र0
30.	श्री जैनपाल जैन	कार्यकारिणी सदस्य	9312261438	jpjvidyabharti@gmail.com	साहिबाबाद

रतनपुर के तरिया तब अउ अब

(तालाबों का इतिहास एवं वर्तमान परिदृश्य)

संकलन
द्वारा - **रश्मि रामेश्वर गुप्ता,** व्याख्याता
बिलासपुर , छत्तीसगढ़
मो. नं. - 9755252605

छत्तीसगढ़ के न्यायधानी बिलासपुर से मात्र 25 कि. मी. के दूरी में बसे हावय राजा रत्नदेव के द्वारा स्थापित मां महामाया के नगरी रतनपुर जउन ल तालाब के नगरी या तरिया के नगरी कहे जाथे। मन होईस ये जाने के कि आखिर इहाँ के तरिया के का खासियत हे अउ उंखर तब अउ अब के दसा में का परिवर्तन आये हावय। जानकारी में जउन बात सामने आईस वो हर बहुत ही आश्चर्यजनक हे।

कहे जाथे कि पहली इंहां पिये के पानी उपलब्ध नई रहिस हे। राजा रत्नदेव हर इंहा अइसे प्रयोग करिस के इंहा के पानी हर गंगाजल बरोबर होगे।

रतनपुर के चारों डहर पहिली पहाड़ी रहिस हावय। ये पहाड़ी ले झर -झर के जउन पानी रतनपुर में आवय ओला बचाए खातिर राजा हर पहाड़ी के नजदीक -नजदीक में तरिया बनवाये बर शुरू करिस। अब राजा हर अईसे तरिया बनवावय के हर तरिया के आधा मीटर नीचे में एक ठन अउ तरिया राहय तब ऊपर के तरिया के पानी हर भुईयां के भीतरे -भीतर रेती -माटी ले रिस -रिस के छनावत - छनावत नीचे के तरिया में आवय । अइसे करत - करत राजा हर 250 ठन तरिया बनवा डारिस जेमा सबले बड़े तरिया के नाव हावय दुलहरा तरिया। एखर नाव दुलहरा रखे के कारन ये हावय कि आज भी ए तरिया में दू प्रकार के लहर देखे जाथे जउन ला गंगा अउ जमुना के रूप माने जाथे। ए तरिया के पानी ला आज भी गंगा मइया के पानी जइसे पवित्र माने जाथे अउ कहे जाथे कि इंहा डुबकी लगाए ले शरीर के सब रोग - राई दुरिहा हो जाथे। अति मिठ पानी दुलहरा तरिया के माने जाथे।

जब अतेक सोच विचार के राजा हर तरिया बनवाइस तब एखर से हर तरिया के पानी के अपन अलग - अलग महत्तम होगे। अगर विज्ञान के भाषा मे कहे जाय तो हर तरिया के पानी के पी.एच. मान अलग होगे अउ एखरे सेती हर तरिया में अलग - अलग प्रकार के जलीय पौधा अउ अलग -अलग प्रकार के जलीय जीव पनपे लगिस। तब हर तरिया हर विशेष आकर्षण के केंद्र बनगे। अब हर तरिया में अलग - अलग प्रकार के जलचर अउ नभचर देखे बर मिलय। हर तरिया में अलग -अलग प्रकार के पक्षी मन पानी पिये बर आवय।

इहाँ के सुंदरता हर हजारों कि. मी. दुरिहा के पक्षी मन के घलाव मन ला भाए लागिस । अब आज भी साल भर इंहां प्रवासी पक्षी मन के आना-जाना लगे रहिथे। हर मौसम में इंहा भांति -भांति के पक्षी आज भी देखे बर मिल जाथे।

रतनपुर के तीर में खूंटाघाट बांध घलाव हावय। मानसून के आते साथ पाकिस्तान, बांग्ला देश, श्रीलंका अऊ केरल ले जाघिल, दांख (कंकारी) पक्षी मन के झुंड हर खूंटाघाट के टापू में आके अपन बसेरा बना लेथे। रतनपुर के गजकिला के तीर में खईया तरिया में पनकौआ (ग्रेट कारमोरेट) हजारों के संख्या में डेरा जमाए रहिथे जेला देखे बर लोगन दुरिहा- दुरिहा ले आथे।

चाहे ठंड हो या बरसात हर मौसम में अवइया पक्षी मन के कारण ही रतनपुर में पक्षी अभयारण्य के मांग हमेशा करे जाथे फेर अभी तक वो मांग पूरा नई होय हे। रतनपुर के चारों डहर तरिया अउ एखर तीर - तखार के जघा मन वन आच्छादित हावय एखरे सेती इंहा सालभर हरियाली रहिथे। आज पूरा विश्व मे रतनपुर जइसे जघा नई हे। रतनपुर हर पूरा विश्व मे झील बचाओ योजना के रामसर साइट में घलाव शोध के विषय होगे हावय।

अतेक बड़े गौरव के बात हरय कि आज रतनपुर जइसे जघा पूरा विश्व मे नई है फेर दुख के बात ये हे कि आज उहां हमन ला लगभग 120 ठन तरिया ही मुश्किल से देखे बर मिलथे अउ वहू प्रदूषित। आज मनखे मन अपन स्वारथ बर जम्मों रहे सहे तरिया ल पाट - पाट के प्रकृति के बेंदरा बिनास करत हावय। अगर पर्यावरण विभाग जागरूक हो के जम्मों तरिया ला फिर से जीवित करे के प्रयास करय तो आज भी राजा रत्नदेव के जादुई तरिया के आनंद हमन ला मिल सकत हे। राजा रत्नदेव के अद्भुत सोच अउ अद्भुत तरिया के महत्तम ला जउन एक घंव देख लिही अउ सुन लिही वो हर अपन जिनगी भर नई भुला सकय।

'जय भारत जय छत्तीसगढ़'

माँ का प्यार- निस्वार्थ और अनंत

- डॉ मंजिरी बक्षी
(शिक्षाविद, हैप्पीनेसकोच, कौंसिलर)

माताओं और मातृदेवियों के सम्मान में त्यौहार प्राचीन काल से चले आ रहे हैं। मातृदिनमाताओंके सम्मान हेतु मई के दूसरे रविवार को मनाया जाता है।

माँ एक किताब है - जिसमें जीवन के हर प्रश्न का उत्तर छिपा है। वह बिना कहे समझने वाली, बिना मांगे देने वाली और बिना थके चलने वाली शक्ति है। जब हम मातृ दिन मना रहे हैं, आइए हम जीजाबाई जैसी माताओं से प्रेरणा लें और समाज को ऐसे संस्कार दें जो एक बेहतर राष्ट्र की ओर ले जाएँ।

'माँ' शब्द मात्र उच्चारित होते ही हृदय में एक गहन भावना उमड़ पड़ती है - ममता, सुरक्षा, त्याग और निस्वार्थ प्रेम की अनुभूति। मातृ दिन केवल एक दिन नहीं, बल्कि माँ के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का प्रतीक है। यह दिन हमें उस महान व्यक्ति को स्मरण करने का अवसर देता है जिसने हमें जीवन दिया, चलना सिखाया, गिरने पर सम्भाला और सही दिशा दी। माँ केवल जीवनदायिनी नहीं, अपितु चरित्र और राष्ट्र निर्माण की आधारशिला है।

माँ - जीवन की प्रथम गुरु

'माँ की गोद ही पहला विद्यालय होता है।' एक बच्चा जब जन्म लेता है, तो सबसे पहले वह अपनी माँ की आँखों में विश्वास देखता है। वह माँ की गोद में शांति, माँ की बातों में ज्ञान और माँ की उँगली थाम कर चलने में आत्मबल पाता है। माता जी की लोरी से ही शब्दों का पहला परिचय होता है और उनके नैतिक निर्देशों से ही बच्चे का मूल्य-निर्माण प्रारम्भ होता है -माँ के संस्कारो से परिवार अपने आप समरस, अनुशासित और सद्गुणी होता है।

जीजाबाई - मातृत्व की महान मिसाल

भारतीय इतिहास में अनेक माताओं ने अपने मातृत्व से समाज और राष्ट्र को दिशा दी है, परंतु शिवाजी महाराज की माता जीजाबाई का स्थान विशेष है। उन्होंने न केवल अपने पुत्र का पालन-पोषण किया, बल्कि उसे राष्ट्र भक्ति, साहस और नीति का पाठ पढ़ाया।

जब शिवाजी मात्र बालक थे, जीजाबाई ने उन्हें रामायण और महाभारत की कथाएँ सुनाईं, और नायकों के गुणों को आत्मसात करने की प्रेरणा दी। उन्होंने अपने पुत्र से कहा -

''हे शिवा, तू केवल मेरा पुत्र नहीं, इस मातृभूमि का रक्षक है।''

एक माँ की यह शिक्षा थी जिसने एक वीर योद्धा, प्रजावत्सल राजा और हिन्द स्वराज्य के निर्माता को जन्म दिया।माता ने पुत्र के पाँवों को सशक्त बनाया और उन्हें राष्ट्र की राह पर अग्रसर किया।

माँ का त्याग और समर्पण

माँ अपनी इच्छाओं को पीछे रखकर अपने बच्चों की ज़रूरतों को प्राथमिकता देती है। चाहे वह भूखी हो, पर बच्चे को भरपेट भोजन देती है। माँ का हृदय ''समुद्र से भी गहरा और आकाश से भी विशाल'' होता है। वह केवल शारीरिक पोषण नहीं देती, बल्कि आत्मिक ऊर्जा भी प्रदान करती है।

आज की माताएँ भी अनेक भूमिकाएँ निभा रही हैं - शिक्षक, प्रबंधक, मार्गदर्शक और कर्मयोगिनी के रूप में। वे घर और कार्यस्थल दोनों में संतुलन बनाकर संतान को एक मजबूत नींव प्रदान करती हैं।

नारी सशक्तिकरण की जड़ में माँ

बेटियों में आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता के बीज घर से ही पड़ते हैं। जब माँ बेटी को सपने देखने की

अनुमति देती है, तब वह आकाश छूने की हिम्मत जुटा पाती है।

जीजाबाई यदि शिवाजी को वीर बना सकती हैं, तो आज की माँ भी एक वैज्ञानिक, डॉक्टर, कलाकार या प्रशासक बना सकती है – बस ज़रूरत है समर्थन, स्नेह और संस्कार देने की।

मातृत्व ने असंभव को संभव कर दिखाया है यह सत्य हम अनगिनत उदाहरणों में देख सकते हैं–

डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम भारत के मिसाइल मैन और पूर्व राष्ट्रपति ने अपनी मां का हमेशा सम्मान किया। उनका परिवार आर्थिक रूप से कमजोर था, लेकिन उनकी मां ने उन्हें कभी यह महसूस नहीं होने दिया कि वे कुछ नहीं कर सकते। माँ ने अपने हिस्से का खाना छोड़कर अपने बच्चों को खिलाया, और हर समय उन्हें प्रोत्साहित किया कि वे ईमानदारी, परिश्रम और उच्च्च आदर्शों पर चलें। डॉ. कलाम ने कहा था–

''मेरी सफलता की नींव मेरी माँ की ममता और शिक्षाओं में है।''

क्रिकेट के भगवान माने जाने वाले सचिन तेंदुलकर की सफलता में भी उनकी माँ ''रजनी तेंदुलकर'' की बड़ी भूमिका रही। उन्होंने सचिन को बचपन से ही खेल में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया, उनके खान–पान, समय और अभ्यास का पूरा ध्यान रखा। जब सचिन पहली बार भारत के लिए खेले, तब उन्होंने अपनी माँ को टीवी पर उनका खेल दिखाने के लिए घर पर टीवी लगवाया — क्योंकि वे कभी भी स्टेडियम नहीं जा सकीं। सचिन ने अपनी उपलब्धियों का श्रेय हमेशा अपनी माँ के आशीर्वाद और त्याग को दिया।

समाज निर्माण में माँ की भूमिका

समाज में माँ वह प्रथम स्तंभ है जो संतुलन, सहयोग और समरसता का पाठ पढ़ाती है। एक अच्छे नागरिक की नींव माँ ही रखती है। यदि हम एक सशक्त राष्ट्र चाहते हैं, तो हमें माताओं को शिक्षित, समर्थ और आत्मनिर्भर बनाना होगा।

इस दृष्टिकोण से विद्यालयों और शिक्षण संस्थानों का दायित्व है कि वे माँओं की भूमिका का सम्मान करते हुए छात्र–छात्राओं में पारिवारिक और नैतिक मूल्यों का विकास करें।

मातृत्व का सम्मान – एक सामाजिक कर्तव्य

मातृ दिन केवल पुष्प देने या सोशल मीडिया पोस्ट लिखने का अवसर नहीं, बल्कि यह आत्मनिरीक्षण का दिन है। क्या हम अपनी माँ के योगदान को पर्याप्त आदर दे पा रहे हैं? क्या हम उन्हें समय, सम्मान और संवाद दे पा रहे हैं?

''जिस घर में माँ की पूजा होती है, वहाँ लक्ष्मी स्थायी रूप से निवास करती है।''

माँ न केवल धन, बल्कि सुख और शांति की दूत होती है।

माँ को सच्चा प्यार करना तभी माना जा सकता है, जब हम उनके सपनों, मूल्यों और शिक्षाओं को अपने जीवन में स्थान दें।

माँ की ममता सागर जैसी, गहराई में प्यार समाए,
त्याग से जीवन संवार दे, हर दुख में साथ निभाए।
उसके आँचल की छाँव तले, मिलती है दुनिया सारी,
माँ ही तो है ईश्वर सजीव, मै उसका सबसे बडा पुजारी।

धन्यवाद्

---00---

सेवा और संस्कार से बस्ती हुई नशा मुक्त

- चंद्रकुमार डडसेना
प्रांत प्रमुख
सेवा क्षेत्र की शिक्षा छत्तीसगढ़

कोरबा (छत्तीसगढ़) - आज से 15 बरस पहले कोरबा नगर के इमली डुग्गू बस्ती एक जाना पहचाना नाम था, जाना पहचाना इसलिए शाम के समय नगर के मदिरा प्रेमी इसी बस्ती में आकर शराब का सेवन करते थे, घर-घर मदिरा बनती थी। रोज लड़ाई-झगड़ा होता था। सरस्वती शिशु मंदिर सीतामढ़ी कोरबा की दीदी द्वारा 5 घर के आंगन में हि प्रारंभ हुआ सरस्वती संस्कार केंद्र, प्रारंभ में 15-16 भैया-बहिन आते थे. देखते देखते दीदी श्रीमती कन्हैया उइके के संपर्क कौशल से संख्या 30-35 हो गई. दीदी जी कथा- कहानी, गीत-भजन के माध्यम से पढ़ाती थी, धीरे-धीरे बच्चे संस्कारित होने लगे। गीत और भजन से प्रभावित होकर बस्ती की माताओं ने कहा हम भी गीत और भजन सीखेंगे. फिर क्या था सरस्वती महिला मंडली का गठन हो गया, शाम को माताएँ गाती थी। गीत भजन गाकर भारत माता की आरती करतीं थीं। वे आपस में चर्चा करते थे। उन्हें बस केवल एक बात का दुख था कि शाम के समय हमारे मोहल्ले में रोज लड़ाई-झगड़ा होता है और इसका कारण था लोगों का शराब पीना। यही पीकर के यहीं पर गाली गलौच और लड़ाई करते थे। सब ने दीदी जी से कहा दीदी जौ कोई उपाय करिए यह शराब का कार्य बंद हो जाए। दीदी जी ने कहा आप लोग शराब बेचना बंद कर देंगे तो शराब पीने वाले भी नहीं आएंगे। पूरी महिला मंडली ने मिलकर बात मानी। दीदी जी ने थानेदार से बात करके शराब बंद करवाने का आग्रह किया। दूसरे दिन पुलिस बल महिला कांस्टेबल सहित मोहल्ले में छापा मारने आ गए. दोषी लोगों को थाने में बैठा कर रखा गया। संस्कार केंद्र की दीदी जी श्रीमती कन्हैया उइके के आग्रह पर लिखित में क्षमा मांगने व शराब नहीं बनाने की शर्त पर छोड़ दिया गया। इस कार्य से दीदी जी का प्रभाव पूरे वस्ती में दिखने लगा। महिला मंडली के माध्यम से गणेश पूजा, नवरात्रि, भोजली का आयोजन होने लगा। शाम के समय महिलाएं अपने घरों में आरती के साथ संध्या वंदन करने लग गए. धीरे-धीरे बस्ती में सुधार आने लगा। हिंदुत्व जागरण का केंद्र बनने लगा. शराब छोड़ने से कई घर उजड़ने से बच गए। छोटे से सरस्वती संस्कार केन्द्र की प्रेरणा से अब यहां के अभिभावक अपने बच्चों को सरस्वती शिशु मंदिर कोरबा में भी प्रवेश दिलाने लग गए। प्रति वर्ष 5 से 10 बच्चे विद्यालय में दीदी जी के माध्यम से नवीन प्रवेश लेते हैं। दीदी जो कहती है- हमारा लक्ष्य है सेवा संस्कार से सब कुचक्र तोड़ेंगे, भारत मां के सब सपूत मिल, मन से मन जोड़ेंगे।

---oo--

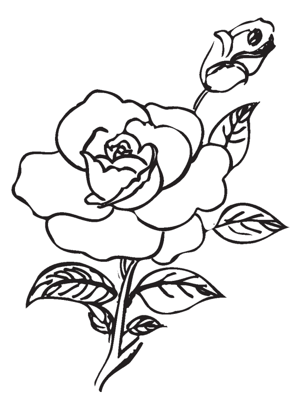

॥ मां ॥

- **एम.एल. नत्थानी**
रायपुर, छत्तीसगढ
मो. 9893333786

मां जीवन की आशा है
धैर्य की वो परिभाषा है ।
मां सुखों का संगम है
ममता एंव अभिलाषा है ।

मां सुकून का एक पल है
मां ही प्यास में जल है ।
मां सभी दुखों का हल है
मां आज है, मां कल है ।

मां स्वार्थ रहित सत्कार है
मां जीवन का आधार है ।
मां हंसता हुआ परिवार है
मां ही सुखों का संसार है ।

मां का दामन थामा जिसने
हर बाधाएं दास हैं उसके ।
मिलती हैं खुशियां जीवन की
होती मां पास है जिसके ।

मां के आंचल में है शीतल
सुख की छाया निराली है ।
जिसने इस सुख को पाया
सचमुच वह भाग्यशाली है ।

---००--

कविता

- **निश्चय बाजपेयी**
सी.ए. पूर्व छात्र
स.शि.मं. राजातालाब, रायपुर

दीप-बाती तप रहे जिसको जलाने के लिये,
एक झौंका आएगा वो लौ बुझाने के लिये..

रीत जग की सीखने में, उम्र आधी लग गई,
और फिर आधी लगी उसको निभाने के लिये..

थी घड़ी आनंद की या दुख मनाने की घड़ी,
हर घड़ी जीवन मे आई बीत जाने के लिये..

---00---

कर्तव्य का निर्वहन उपासना का सर्वोत्कृष्ट स्वरूप है

श्री मद्भगवद्गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कर्म के महत्व को बताते हुए कहा है– हे अर्जुन, तुम्हें केवल कर्म करने का अधिकार है। कर्मों के फल प्र तुम्हारा अधिकार नहीं है। अत: तुम निरंतर कर्म के फल पर मनन मत करो और अकर्मण्य भी मत बनो। गीता के समस्त अध्यायों का सार, इस एक श्लोक में ही निहित है। 'हम इतने पूजा–पाठ करते हैं, फिर भी हमें उनका फल नहीं मिलता', कई भक्त ऐसा सोचते होंगे। कोई विद्यार्थी परीक्षा परिणाम घोषित होने पर भी कुछ ऐसा ही सोच सकता है। किसी संस्थान के कर्मचारी पदोन्नति न होने पर दूसरे कर्मचारियों से अपनी तुलना करके दुखी हो जाते हैं। ऐसा जीवन के विविध आयामों में देखने को मिलता है। घर में भी भाई–बहनों के मन में आ सकता है कि मेरे मम्मी–पापा, मेरे भाई या बहन को मुझ कर्मचारी चाहता है कि उसकी सभी रिपोर्ट्स अप टू द मार्क जाएं। संस्था का प्रमुख भी यही चाहता है। किसी भी कंपनी को आधिकारिक प्रॉफिट में लाने के लिए श्रेष्ठ नीतियों का निर्माण व उनका अनुपालन नितान्त आवश्यक है। आध्यात्म के क्षेत्र में भी ऐसा ही है। प्रार्थना का प्रयोजन स्पष्ट होना चाहिए। व्यक्तिगत उन्नति के हम कर्म व प्रार्थना करते हैं तब सामूहिक उन्नति के लिए कर्म व प्रार्थना भी नियमित रूप से किए जाने चाहिए। जब भी कोई बड़ा मिशन होता है तब वह सब के सहयोग से ही संपन्न होता है। जब देश पराधीन हो गया था तब भी सामूहिक प्रयासों से ही स्वाधीनता प्राप्त हुई। आचार्य विनोबा भावे का भूदान आंदोलन मुझे याद आता है जिसमें उन्होंने शुभप्रयोजन के लिए बड़े जमींदारों को भूमि दान के लिए प्रेरित किया और अपेक्षा से अधिक सहयोग प्राप्त किया। आज मानव समाज विशेष प्रकार की समस्याओं के दौर से गुजर रहा है। भौतिकता की चकाचौंध में आत्मा गुलाम हो गई प्रतीत होती है, जिसके कारण भांति–भांति की विसंगतियां जन्म लेती हैं। इन सब के समाधान के लिए प्रत्येक मनुष्य के भीतर एक दृढ़ इच्छाशक्ति की आवश्यकता है। हमारे पास एक विशाल संपत्ति है। यह है, विशाल जनसमूह की शक्ति। इसके बल पर हम भारतवासी बड़ी से बड़ी समस्या को हल करने की सामर्थ्य रखते हैं। साथ ही हमारे पास अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर है। शिक्षा व तकनीक में भी हम किसी भांति कम नहीं। आवश्यकता है तो समस्त शक्तियों के एकजुट होकर सही दिशा में कार्यान्वयन की। हमारे घर के बुजुर्ग भी इस मानवता मिशन में अपना भरपूर योगदान दे सकते हैं। बच्चों, वृद्ध, युवा सभी को अपने समय का कुछ भाग प्रतिदिन मानवता के कल्याण के कार्यों में अवश्य ही निवेश करना चाहिए। आत्म सुधार को प्राथमिकता देना आवश्यक है। यदि इस दिशा में एकजुट होकर प्रयास किया जाए तो वह दिन दूर नहीं जब हम सतयुग व रामराज्य के दर्शन अपनी आंखों से कर पाएंगे। साथ ही भावी पीढ़ियों के लिए एक सद्भाव व भाईचारे का संदेश देकर उन्हें भी जीवन की सार्थकता से अवगत करा सकेंगे।

संकलित

समत्वं योग उच्यते

जिस मनुष्य का जीवन योगयुक्त है, उसे जीवन चलाने के कर्म बंधन में बांधने वाले नहीं होते। जैसे कमल कीचड़ में रहकर भी कमले ही रहता है। युक्त और अयुक्त का अर्थ योगयुक्त और योगअयुक्त से है अर्थात योग है समत्व बुद्धि। 'समत्वं योग उच्यते' । समत्व बुद्धि से तात्पर्य सोच-विचार कर किए गए कर्म को योगयुक्त कर्म कहते हैं। समत्व बुद्धि से अर्थ सुख-दुख, विजय-पराजय, हर्ष-शोक, मान-अपमान इत्यादि द्वंद्वों में विचलित हुए बिना एक समान शांत चित्त रहे- वही कर्मयोगी कहलाता है। स्थितप्रज्ञः जिस काल में यह पुरुष मन में स्थित संपूर्ण कामनाओं को त्याग देता है, उस काल में आत्मा से ही आत्मा में संतुष्ट हुआ, जैसे जहाज को चलाने वाले के पास ठीक दिशा बताने वाला कम्पास या यंत्र होना चाहिए, उसी तरह श्रेष्ठ जीवन जीने के तथा मोक्ष के अभिलाषी व्यक्ति के पास 'योग' होना चाहिए। योग नहीं तो जीवन दिशाहीन है। यही बात कृष्ण ने गीता में स्थितप्रज्ञ के विषय में कही है। बुद्धि को निर्मल और तीव्र करने के लिए योग ही एक मात्र साधन है। योग सथित व्यक्ति साधारण मनुष्यों से विलक्षण देखने लगता है। जिस व्यक्ति के भीतर जीवन में सत्य की किरणें फैल जाती हैं, सत्य का सूर्य जगता है और जिसकी आंतरिक चेतना जागृति को, पूर्ण जागृति को उपलब्ध हो जाती है, उसका जीवन स्पांटेनियस हो जाता है, सहज हो जाता है, सहज-स्फूर्त हो जाता है। उसके जीवन में किसी ढांचे को खोजना मुश्किल है। उसके जीवन में कोई बंधी बंधाई रेखाएं नहीं होतीं।

- संकलित

दो पैसे के काम के लिए तीस साल की बलि

स्वामी विवेकानंद एक बार कहीं जा रहे थे। रास्ते में नदी पड़ी तो ये वहीं रुक गए, क्योंकि नदी पार कराने वाली नाव कहीं गई हुई थी। स्वामीजी बैठकर राह देखने लगे कि उधर से नाब लौटे तो नदी पार की जाए। एका-एक वहां एक महात्मा भी आ पहुंचे। स्वामीजी ने अपना परिचय देते हुए उनका परिचय लिया। बातों ही बातों में महात्माजी की पता चला की स्वामीजी नदी किनारे नाव की प्रतीक्षा कर रहे हैं। महात्मा जी बोले, अगर ऐसी छोटी-मोटी बाधाओं को देखकर रुक जाओगे तो दुनिया में कैसे चलोगे? तुम तो स्वामी हो, बड़े आधात्यात्मिक गुरु और दार्शनिक माने जाते हो। जरा सी नदी नहीं पार कर सकते? देखो, नदी ऐसे पार की जाती है। महात्मा जो खड़े हुए और पानी की सतह पर तैरते हुए लंबा चक्कर लगाकर वापस स्वामी जी के पास आ खड़े हुए। स्वामीजी ने ने आश्चर्य चकित होते हुए पूछा, महात्माजी, यह सिद्धि आपने कहां और कैसे पाई? महात्मा जी मुस्कुराए और बड़े गर्व से बोले, यह सिद्धि ऐसे ही नहीं मिल गई। इसके लिए मुझे हिमालय की गुफाओं में तीस साल तपस्या करनी पड़ी। महात्मा की इन बातों को सुनकर स्वामी जी मुस्करा कर बोले, आपके इस चमत्कार से मैं आश्चर्यचकित तो हूं लेकिन नदी पार करने जैसे काम जो दो पैसे में हो सकता है, उसके लिए आपने अपनी जिंदगी के तीस साल बर्बाद कर दिए। यानी दो पैसे के काम के लिए तीस साल की बलि ! ये तीस साल अगर आप मानव कल्याण के किसी कार्य में लगाते या कोई दवा खोजने में लगाते, जिससे लोगों को रोग से मुक्ति मिलती तो आपका जीवन सचमुच सार्थक हो जाता।

- संकलित

क्षमा करें और भूल जाएं

जीवन में हमें कई बार चुनौतियों और निराशाओं का सामना करना पड़ता है। जीवन में हमारा किसी न किसी ऐसी घटना से साक्षात्कार होता है, जो हमें पसंद नहीं होती या जिसके कारण हमें दुख होता है। जैसे किसी व्यक्ति ने हमारा किसी तरह अनुचित किया हो, शब्दों से हमें भावनात्मक रूप से दुख पहुंचाया हो या शारीरिक कष्ट पहुंचाया हो। परिणाम यह होता है कि हम निराश, दुखी और क्रोधित हो जाते हैं। जब तक हम किसी को क्षमा नहीं करते, तब तक हमारे साथ क्या होता है? हम हमेशा उसी घटना के बारे में सोचते रहते हैं या किसी और से भी उन बातों को दोहराते रहते हैं। कुछ लोग जिनका स्वयं पर नियंत्रण नहीं होता, वे शारीरिक रूप से उस व्यक्ति को हानि पहुंचाते हैं या अपना क्रोध किसी और पर निकालते हैं। ऐसा होने पर हम अपने चारों ओर नकारात्मक वातावरण पैदा कर लेते हैं। अपने मन की शांति खो देते हैं। कुछ क्षणों में घटित हुई घटना के लिए हम अपने जीवन के तमाम घंटे इस बात में लगा देते हैं कि उसका बदला कैसे लें। यदि हम इसके बजाय क्षमा कर दें तो हम इस समय का शांतिपूर्वक सदुपयोग कर सकते हैं। हम अपना ध्यान उस ओर लगाएं, जो आध्यात्मिक रूप से मददगार हो। जैसे कि पिता-परमेश्वर को याद करना, ध्यान-अभ्यास करना, निष्काम सेवा करना और आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करना। आध्यात्मिक मार्ग पर ध्यान-अभ्यास में सफलता अपने मन को स्थिर करके अंतर में ध्यान टिकाने पर निर्भर है। हमारे ध्यान-अभ्यास में जो सबसे बड़ी बाधा है, वह है ऐसा कुछ होना जो हम नहीं चाहते और जिसे हम भुला नहीं पाते।

– संकलित

शुभ कार्य तत्काल करो

कोई स्री अपने पिता के यहां से लौटी थी, अपने पति से कह रही थी – 'मेरा भाई विरक्त हो गया है। वह अगली दीवाली पर दीक्षा लेकर साधु होने वाला है। अभी से उसने तैयारी प्रारंभ कर दी है। वह अपनी संपत्ति को उचित व्यवस्था करने में लगा है।' पत्नी की बात सुनकर पति मुस्कुराया। स्त्री ने पूछा- 'तुम हंसे क्यों ? हंसने की क्या बात थी।।' पति बोला- और तो सब ठीक है, किंतु तुम्हारे भाई का वैराग्य मुझे बहुत अद्भुत लगा। वैराग्य हो गया है दीक्षा लेने की तिथि अभी निक्षित हुई है और वह संपत्ति की उचित व्यवस्था में लगा है।'! भौतिक संपत्ति में बुद्धि और इस उत्तम काम में भी इतनी दूर को योजना। इस प्रकार की तैयारी करके त्याग नहीं हुआ करता। त्याग तो सहज ही हुआ करता है। स्री को बुरा लगा वह बोली- 'ऐसे ज्ञानी हो तो तुम्हों क्यों कुछ कर नहीं दिखाते।' 'मैं तो तुम्हारी अनुमति की ही प्रतीक्षा में था।' पुरुष ने वस्र उतार दिए और एक घोती मात्र पहने घर से निकल पड़ा। स्री ने समझा कि यह परिहास है। थोड़ी देर में उसका पति लौट आवेगा, परंतु वह तो लौटने के लिए गया ही नहीं था। सच है वैराग्य के लिए कोई तिथि नहीं सोचो जाती। वैराग्य के लिए मन, कर्म और अपने विचार अपने नियंत्रण में होना जरूरी है। तभी हम वैराग्य के बारे में कल्पना कर सकते हैं।

– संकलित

धन्वंतरि का ध्यान कर अपने स्वास्थ्य के प्रति रहें सचेष्ट

भन त्रयोदशी या धनतेरस पर्व की विशेषता यही है कि उस दिन आप यह मानें कि आप जो चाहते हैं, वह धन आपके पास है। केवल सोना-चांदी ही धन नहीं है, ज्ञान भी धन है। यह सबसे बड़ा धन है। आपको अपने ज्ञान को संजोना चाहिए और प्रचुरता का अनुभव करना चाहिए। जीवन में धन्यभागों अनुभव करना, कृतज्ञता का अनुभव करना सबसे बड़ा धन है, जिनमें कृतज्ञता का अभाव होता है, वे धनी नहीं होते हैं। स्वास्थ्य भी धन है। स्वास्थ्य यदि ठीक नहीं, तो भौतिक धन का क्या उपयोग हो सकता है। धन त्रयोदशी देवताओं के वैद्य भगवान धन्वंतरि की जयंती भी है। कहा जाता है कि वह समुद्र मंथन में अमृत का कलश लेकर प्रकट हुए थे। अत: धन त्रयोदशी पर धन्वंतरि का ध्यान कर अपने स्वास्थ्य के प्रति भी सचेष्ट रहें। योग व ध्यान करें। आपके पास जो मानव शरीर है, यह भी तो ईश्वर का दिया बड़ा उपहार है। यह भी धन है। हमारी चेतना में ऐसा गुण है कि जो बीज आप बोते हैं, वहीं प्रकट होता है। यदि आप यह सोचें कि वर्तमान में मेरे पास पर्याप्त धन है, तब आप धन के पीछे पागल नहीं होते। जब आप सोचते हैं कि मेरे पास पर्याप्त धन है, चेतना में धैर्य आता है, हिम्मत आती है। कहा गया है, उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी:, जिसका अर्थ है, जो मेहनत करता है और शेर जैसा निर्भय होकर चलता है, लक्ष्मी भी उसी के पास आती हैं। धनतेरस के दिन अपनी चेतना से 'अभाव के भाव' को उखाड़ कर फेंक दीजिए। अपने मन से, 'मैं विपन्न हूं, मैं भिखारी हूं' ये सब बातें हटा दीजिए। शेर की तरह सम्मान के साथ चलिए।

– संकलित

जब मन हो अशांत मंत्रों का जप और ध्यान करें

शुकदेव राजा परीक्षित को कथा सुना रहे थे, उस समय राजा ने पूछा कि आजकल लोग इतने बेचैन क्यों हैं? लोगों का मन अशांत क्यों है? शुकदेव ने राजा को एक कथा सुनाई कि एक दिन पृथ्वी ने भी भगवान से यही बात पूछी थी। पृथ्वी ने भगवान से कहा था कि ये लोग जो खुद मौत के खिलौने हैं। ये सभी मुझे यानी धरती, राज्य जीतना चाहते हैं। अभी तक मुझे यानी धरती को कोई भी मृत्यु के बाद अपने साथ ऊपर नहीं ले जा सका है। लोग ये बात क्यों नहीं समझते हैं? शुकदेव ने राजा से कहा कि पृथ्वी ने ये सभी बातें भगवान से इसलिए कहीं थीं, कि धरती पर जो धन-संपत्ति है, वही सारे झगड़ों की जड़ है। सभी चाहते हैं कि मेरे पास दूसरों से ज्यादा वैभव हो, सभी इसी में लगे हुए हैं। जिस दिन इस दुनिया से जाएंगे, सब कुछ यहीं रह जाएगा।

परीक्षित ने शुकदेव की बातें ध्यान से सुनीं और कहा कि आजकल इतनी अशांति है तो शांति पाने के लिए हमें क्या करना चाहिए? शुकदेव ने कहा कि जब भी हमारा मन अशांत हो, हमें भगवान के नामों का जप करना चाहिए, ध्यान, पूजा-पाठ करना चाहिए। अपने इष्टदेव के नामों का जप करने से नकारात्मकता दूर होती है, मन शांत होता है। मंत्र जप से शरीर में जो परिवर्तन होते हैं, उनसे मन शांत होता है।

– संकलित

पांचो तत्वों को मिला है देवता का दर्जा

प्रदूषण की विनाशलीला को देखते हुए भारतीय ऋषियों ने कदम-कदम पर मानव को सजग किया है। चूंकि मनुष्य पंचमहाभूतों का समन्वय रूप है इसलिए सबसे पहले आध्यात्मिक महापुरुषों ने इसे जन्म से लेकर मृत्यु तक के अलग-अलग संस्कारों के साथ जोड़ दिया, ताकि मां के गर्भ में आने से लेकर सौ वर्ष तक वह अदैन्य बाव में जी सके। सबसे पहले भारतीय ऋषियों ने वसुधैव कुटुंबकम की जो परिकल्पना की उसमें नख से लेकर शिख तक पूरा शरीर एक वसुधा (धरती) के समान है। शरीर के किसी भी हिस्से में तकलीफ है तो यह शरीर रूपी विश्व को प्रभावित करेगी। इसके अलावा मनुष्य के जीने के जितने भी स्नेत हैं, वे सबी कुटुंब के सदस्यों की तरह हैं। जिसे 'क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा, पंच रचित यह अधम शरीरा' से समझा जा सकता है। शरीर का आंतरिक हिस्सा चूंकि अधम है इसलिए बाह्य प्रकृति से उत्तमोत्तम पदार्थ ग्रहण कर उसके स्वरूप को और अधिक विकृत होने से बचाया जाना नितांत जरूरी है। इसीलिए पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश सबको देवता का दर्जा दिया गया। द्वापर युग के महानायक भगवान श्रीकृष्ण का पूरा जीवन ही प्रदूषण के खिलाफ संघर्ष और जन जागरहण का है। उम्र की परवाह न कर वह यमुना के प्रदूषित तत्व कालिया नाग का वध, प्रदूषित अग्नि लगाने वाले प्रलंबासुर का वध, अंतरिक्ष को शुद्ध करने के लिए व्योमासुर का वध, धरती की शुद्धता के लिए गो पालन करते हैं। त्रेता युग में रावण ने भी खर और दूषण नामक पर्यावरण-शत्रु तैनात किया था।

- संकलित

गरीब विद्वान व राजा भोज, बने भाई-भाई

कई वर्ष पहले धार में राजा भोज का शासन था। उस राज्य में एक गरीब विद्वान रहता था। आर्थिक तंगी से घबराकर एक दिन विद्वान की पत्नी ने उससे कहा- आप राजा भोज के पास क्यों नहीं जाते? वह विद्वानों का बड़ा आदर करते हैं। हो सकता है आपकी विद्वता से प्रभावित होकर वह आपको ढेर सारा धन दे दें। विद्वान राजा के दरबार में पहुंचा। पहरेदार ने पूछा आए कौन हैं? कहां जाना है? विद्वान ने कहा : जाओ राजा से कहो कि उनका भाई आया है। पहरेदार ने जब भोज को यह बात बताई तो... वह सोचने लगे मेरा तो कोई भाई नहीं है फिर कौन हो सकता है। कहीं कोई धूर्त तो नहीं। उनकी उत्सुकता जागी। उन्होंने विद्वान को बुलवा लिया। कैसे हुए भाई-भाई भोज ने विद्वानसे पूछा - क्या तुम मेरे भाई हो? किस नाते से? विद्वान ने कहा - मैं आपका मौसेरा भाई हूँ। आपकी मौसी का लड़का। भोज ने पूछा - कैसे? मेरी तो कोई मौसी नहीं है। विद्वान बोला - महाराज। आप संपत्ति माता के पुत्र हैं और मैं विपत्ति माता का पुत्र। संपत्ति और विपत्ति बहनें हैं। इस नाते मैं आपका मौसेरा भाई हुआ न। यह सुनकर भोज बेहद प्रसन्न हुए। उन्होंने ढेर सारी स्वर्ण मुद्राएँ विद्वान को दीं। फिर भोज ने पूछा - मेरी मौसी तो कुशल हैं न ? इस पर विद्वान ने जवाब दिया - राजन जब तक आपकी मौसी जीवित थी, आपके दर्शन नहीं हुए थे। अब आपके दर्शन हुए तो आपकी मौसी स्वर्ग सिधार गई। इस उत्तर से भोज को और भी प्रसन्नता हुई। उन्होंने विद्वान को गले से लगा लिया।

- संकलित

प्रांतीय वैदिक गणित / मौखिक वैदिक गणित का प्रशिक्षण

दिनांक 13 गई सायं से 18 मई 2025 दोपहर तक सरस्वती शिक्षा मंदिर उच्च माध्य. विद्यालय राजिम में प्रांतीय वैदिक गणित / मौखिक वैदिक का प्रशिक्षण संपन्न हुआ। विभागवार उपस्थिति निम्नानुसार थी

1.	राजिम विभाग	13	5	18
2.	रायपुर विभाग	3	2	5
3.	बिलासपुर विभाग	3	1	4
4.	कोरबा विभाग	3	0	3
5.	दुर्ग विभाग	1	1	2
6.	राजनांदगाँव विभाग	1	0	1
7.	रायगढ़ विभाग	1	0	1
8.	सरगुजा विभाग	3	1	4
	योग	28	10	38
	शिक्षको की संख्या	4	0	4
	अखिल भारतीय अधिकारी	2	0	2
	सर्वयोग	34	10	44

प्रशिक्षको के नाम

1.	श्री गोविंद राम चौधरी	राजिम	प्रांत प्रमुख
2.	श्री वासुदेव श्रीवास	सीतामढ़ी कोरबा	प्रांत सह प्रमुख
3.	श्री मालिक राम वर्मा	बेमेतरा	विभाग प्रमुख दुर्ग
4.	श्री मनोज कन्नौजे	पलारी	विभागप्रमुख रायपुर
5.	श्री देवेन्द्र राव देशमुख	अ.मा संयोजक वैदिक गणित	
6.	श्री प्रसन्न साहू	अ.भा.सह संयोजक वैदिक गणित	

उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में श्री पुरुषोत्तम साहू शास. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय चंपारण (एम.एस.सी. गणित एवं वैदिक गणित के जानकार) का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। दिनांक 15 मई 2025 से समापन सत्र तक श्री देवेन्द्र राव देशमुख, अ.भा. संयोजक वैदिक गणित एवं श्री प्रसन्न साहू अ.भा.सह संयोजक वैदिक गणित का सानिध्य प्राप्त हुआ।

समाचार

मगललोड –सरस्वती शिशु मंदिर उ. मा. वि. मगरलोड के कक्षा–दशम की बहन धन श्री साहू ने 94.16 प्रतिशत अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। राधाकृष्ण बाल संस्कार समिति मगरलोड के व्यवस्थापक– श्री दुर्गा शंकर साहू, कोषाध्यक्ष–श्री लीला राम साहू, सदस्य श्री कमलेश साहू, श्री मैनसिंह हिरवानी , विद्यालय के प्राचार्य श्री असवंत ध्रुव एवं दीदीजी श्री मती वेदू साहू ने बहन धन श्री साहू को उनके निवास स्थान जाकर शुभ कामनाएं प्रदान की एवं उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

वार्षिक परीक्षा परिणाम प्राथमिक विभाग कक्षा नर्सरी(अरुण) से कक्षा चतुर्थ तक घोषित किया गया।इस अवसर पर मुख्य अतिथि समिति के वरिष्ठ सदस्य मान.श्री विकास जी जोशी रहे, समन्वयक आदरणीय श्री सूर्य कुमार पाण्डेय जी ,प्राचार्य श्री राजकुमार देवांगन जी ,प्रधानाचार्य (माध्य.)श्री संजय देवांगन का भी अतिथ्य मिला। मुख्य अतिथि द्वारा पुलवामा मृतकों को श्रद्धांजलि देते हुए अपने उद्बोधन मे कठिन परिश्रम कर लक्ष्य प्राप्त करने एवं विद्यालय के संस्कारों को भी ऊंचाई प्रदान करने की बात कहीं गई।समन्वयक महोदय द्वारा अभिभावकों से अपने पाल्य को मोबाइल के दुष्प्रभाव से दूर रखते हुए उनके अध्यापन मे सहयोग प्रदान करने एवं उनके प्रतिभा के विकास की बात कही गई।

संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा में ऑल इंडिया रैंक 273 छत्तीसगढ़ में तीसरा स्थान प्राप्त करने पर सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय राजिम के पूर्व छात्र भैया अंकित थावानी को बहुत–बहुत बधाइयां शुभकामनाएं।

वनांचल शिक्षा सेवा न्यास छत्तीसगढ़ रायपुर – संकुल स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता आयोजित आज दिनांक 13/4/2025 दिन रविवार को सरस्वती शिशु मंदिर वाड्रफनगर

में सम्पन्न हुई जिसमें उपस्थित जिला समन्वयक श्रीमती कमली देवी संकुल समन्वयक श्री अमरलाल लहरें सरस्वती शिशु मंदिर विद्यालय के आचार्य श्री महावीर देवांगन जी एवं सभी केंद्रों से हुए भैया–बहनों व दीदी जी आचार्य जी शामिल थे जिला बलरामपुर ।। जय श्री राम ।।

बलरामपुर– संकुल बलरामपुर का संकुल स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता ग्राम पंचायत जरहाडीह के हायर सेकंडरी

विद्यालय में किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में हायर सेकंडरी विद्यालय जरहाडीह के प्राचार्य श्री भगवती चरण बैरागी जी एवं जरहाडीह क्षेत्र के बीडीसी श्री सत्येंद्र सिंह जी, बलरामपुर संकुल के संकुल प्रभारी श्री विनय कुमार पाठक जी सरस्वती शिशु मंदिर विद्यालय चांदो के प्रधान आचार्य श्री सुनील मींज, जिला समन्वयक श्रीमती कमली दीदी, सहजिला समन्वयक श्री नरेश लाकड़ा जी, एवं संकुल समन्वयक दिलीप गुप्ता आचार्य –दीदी एवं विभिन्न केंद्रों के भैया–बहन उपस्थित रहे। खेलकूद कर इनाम वितरण करके भोजन पश्चात अपने–अपने घर को प्रस्थान किये।। जय श्री राम।।

गरियाबंद –श्री भूतेश्वर नाथ बाल संस्कार समिति गरियाबंद द्वारा संचालित सरस्वती शिशु मंदिर उच्चर माध्यमिक विद्यालय गरियाबंद में जिला केंद्रीय कृत प्राथमिक(कक्षा पांचवी)तथा पूर्व माध्यमिक (कक्षा आठवीं) का परीक्षा फल घोषित किया गया। जिसमें दोनों परीक्षाफल शत प्रतिशत रहा। इस कार्यक्रम में अतिथि के रूप में श्री लोकनाथ साहू, श्री रिखी राम यादव, श्रीमती तनु साहू,श्रीमती वर्षा तिवारी, श्री किशोर कुमार साहू (शिक्षक), श्री उदे सिंह नागवंशी(शिक्षक)श्रीमती देवकी साहू, श्री तिलेंद्र गंगबेर ,श्री योगेश साहू (शिक्षक), श्रीमती रिचा रनसिंह, उपस्थित रहे। कक्षा पंचम में कुल 67 भैया–बहन उपस्थित रहें। जिसमें 67 प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। इसमें 90% से ऊपर 16 भैया–बहन, 80% से ऊपर 34 भैया –बहन, 70% से ऊपर 13 भैया–बहन,60% से ऊपर 04भैया–बहन उत्तीर्ण हुए। इसी प्रकार कक्षा अष्टम में कुल 44 भैया–बहन में से 90% से ऊपर 04 भैया–बहन, 80% से ऊपर 15 भैया–बहन, 70 % से ऊपर 15 भैया–बहन, 60 % से ऊपर 08 भैया–बहन ,और 01बहन द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए । इस प्रकार परीक्षाफल शत प्रतिशत रहा। कार्यक्रम का संचालन श्री गोविंद किशोर सिन्हा तथा परीक्षाफल की घोषणा श्री बलदाऊ राम ध्रुव ने किया। भैया–बहनों को शिल्ड देकर सम्मानित किया गया। श्री लोकनाथ साहू जी द्वारा भैया/ बहनों को निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। श्री रिखीराम यादव ने भैया–बहनों को अपने लक्ष्य निर्धारित करने के लिए कहा। श्रीमती तनु साहू ने पालक, शिक्षक और भैया –बहनों की मेहनत की सराहना की तथा श्री विश्वनाथ साहू ने कार्यक्रम का आभार व्यक्त किया। इस कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में अभिभावकगण माताएं भैया–बहन आचार्य गण उपस्थित रहे। सभी सफल भैया–बहनों को विद्यालय और समिति परिवार की ओर से उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए ,हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित किये।

प्रगति नगर –सरस्वती शिशु मंदिर उच्च. माध्य. विद्यालय प्रगति नगर एन. टी. पी. सी. कोरबा का वार्षिक परीक्षा फल घोषित किया गया. सरस्वती शिशु मंदिर उच्च माध्य विद्यालय प्रगति नगर एन. टी .पी .सी. कोरबा में स्थानीय वार्षिक परीक्षा का परिणाम घोषित किया गया। प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विभाग के परीक्षा परिणाम में कक्षाशः प्रथम, द्वितीय, एवं तृतीय स्थान प्राप्त भैया–बहिनों को मोमेंटो, प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। संस्कृति ज्ञान परीक्षा में कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त भैया–बहिनों को अतिथियों द्वारा सम्मानित किया गया. सरस्वती शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित मेधावी परीक्षा में स्थान प्राप्त बहिन तृप्ति बंजारे को संस्थान द्वारा प्रेषित सद साहित्य देकर सम्मानित किया गया. इसी तरह सरस्वती शिक्षा संस्थान कुरुक्षेत्र द्वारा आयोजित अखिल भारतीय निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त विद्यालय के आचार्य श्री चंद्रपाल यादव को सरस्वती शिक्षा संस्थान रायपुर प्रान्त द्वारा प्रेषित 1100/–की नगद राशि तथा व्यवस्थापक श्री भरत राम साहू जी द्वारा अपने तरफ से 251/–की नगद राशि देकर सम्मानित किया गया. हमारे विद्यालय के पूर्व छात्र श्री गुंजन शुक्ला द्वारा विद्यालय में कक्षा 12वीं में प्रथम स्थान प्राप्त कु. आशु राठौर को नगद 10000/–एवं द्वितीय स्थान प्राप्त कु. नंदिनी सिंह को 5000/–की राशि अपने माता पिताजी के याद में प्रति वर्ष दिया जाता है उन्हें अतिथियों द्वारा दिया गया. वार्षिक परीक्षा परिणाम के घोषित गरिमामयी कार्यक्रम में

मुख्य अतिथि प्रबंध कारिणी समिति के अध्यक्ष श्री सुरेंद्र कुमार राठौर, व्यवस्थापक श्री भरत राम साहू, प्राचार्य श्री लक्ष्मी नारायण जायसवाल, प्रधानाचार्य श्री परस राम देवांगन ने सर्व प्रथम विद्या की देवी माँ सरस्वती, ब्रम्ह स्वरुप ?, माँ भारती के तैल्य चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर, पुष्पार्चन कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। व्यवस्थापक श्री भरत राम साहू ने सम्बोधित करते हुए कहा कि भैया-बहिन सतत आगे बढ़ते रहे. परिश्रम से ही व्यक्ति आगे बढ़ सकता हैऔर हमेशा आगे बढ़ते रहने का प्रयास करते रहना चाहिए। मेरी शुभकामनायें आप लोगों के साथ है. मुख्य अथिति प्रबंधकारिणी समिति के अध्यक्ष श्री सुरेंद्र कुमार राठौर ने अपने उदबोधन में कहा कि सरस्वती शिशु मंदिर के संस्कार सेवा और समर्पण जीवन में सफलता का मूलमंत्र है. आज सरस्वती शिक्षा संस्थान राष्ट्रवादी विचारधारा का एक ऐसा संवाहक है जिसने अखंड भारत के निर्माण की आधारशिला रखी है. हमारे विद्यालय से शिक्षा प्राप्त कर निकले भैया-बहिन आज विभिन्न प्रशासनिक क्षेत्र, व्यवसायों, समाज सेवा में अपना विशेष योगदान दे रहे हैं। अभिभावकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आप लोग सरस्वती शिशु मंदिर में अपना विशेष योगदान दे रहे हैं। आप लोग इस संस्कार मय वातावरण को समाज के अन्य क्षेत्र में भी फैलावें ये मेरा आग्रह हैं। श्री सुरेंद्र कुमार राठौर जी ने भैया-बहिनों को प्रोत्साहित करने के लिए अपने तरफ से नगद राशि प्रदान किये। प्राचार्य श्री लक्ष्मी नारायण जायसवाल ने कहा कि विद्यालय के भैया-बहिन हमेशा उन्नति करते रहें यही हमारी मूल भावना है। कार्यक्रम का सफल संचालन वरिष्ठ आचार्य श्री दुर्गा प्रसाद नामदेव एवं आचार्य सीता चंद्रा के द्वारा किया गया. इस कार्यक्रम में विद्यालय के समस्त आचार्यो का योगदान सराहनीय रहा।

पाली -सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पाली में स्थानीय वार्षिक परीक्षा परिणाम घोषित किया गया जिसमें प्रबंधन समिति के अध्यक्ष श्री मंगल सिंह छाबड़ा, व्यवस्थापक श्री कौशल सिंह राज, कोषाध्यक्ष श्री बिहारीलाल नवलानी ,सुरेश सोनी ,भैया लाल जायसवाल अशोक श्रीवास्तव, अरविन्द पाण्डेय, प्राचार्य चूड़ामणि साहू अभिभावक श्री अर्जुन चौबे, मनोज कुमार बनर्जी, डमरूधर साहू राधे श्याम यादव, राज कुमार, राकेश जायसवाल,श्री मति प्रतिभा,राजकुमारी, चित्रलेखा, दुलेश्वरी, एवं आचार्य परिवारों की उपस्थिति में परीक्षा परिणाम घोषित हुआ परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा, व्यवस्थापक जी ने भईया बहनों को बधाई एवं शुभकामनाएं व्यक्त की।

सरसींवा - मुख्य अतिथि श्री हेम प्रकाश चौराहा विशिष्ट अतिथि ताराचंद साहू एवं अध्यक्षता श्री मारुति त्रिपाठी द्वारा परीक्षाफल घोषणा संपन्न हुई। परीक्षा परिणाम की घोषणा अलग-अलग विभाग के परीक्षा प्रमुखों द्वारा की गई। अरुण से प्रथम- हंसिका साहू द्वितीय- इलिना लहरे, तृतीय -नमन साहू उदय से प्रथम- आराध्य शर्मा ,नक्ष साहू द्वितीय- धिक्षा यादव तृतीय- देविका साहू प्रथम- से प्रथम नैना त्रिपाठी मयंक साहू द्वितीय -,भाविका साहू ,हर्षिल केसरवानी ,दीप्ति साहू तृतीय- लव्यांश तृतीय से प्रथम- यशाश्री साहू द्वितीय- ज्योति वैष्णव तृतीय -डिंपल साहू तृतीय से प्रथम- श्वेता साहू द्वितीय- लीजा साहू तृतीय -पंकज जयसवाल । चतुर्थ से प्रथम स्वाति गौरहा द्वितीय -रितु साहू तृतीय- डिम्पल यादव ।षष्ठ से प्रथम- मीनाक्षी सिदार ,द्वितीय- स्नेहा जायसवाल तृतीय -पुष्पेंद्र व्यास। सप्तम से प्रथम- प्रदीप कंवर, द्वितीय- यूशिका साहू ,तृतीय- अखिलेश साहू । नवम से प्रथम- सप्तम कर्ष द्वितीय -रमन प्रधान एवं पियूष साहू तृतीय- परी साहू। एकादश से प्रथम- दिशा चौहान, द्वितीय- श्रेया दुबे ,तृतीय- प्रतिभा दीवान का रहा ।इसी प्रकार उपस्थिति में पूर्व प्राथमिक विभाग -से धिक्षा यादव प्राथमिक विभाग- से स्वाति गौरहा, माध्यमिक विभाग- से वंदना प्रधान ,उच्च माध्यमिक विभाग- से वर्षा साहू एवं उच्चतर माध्यमिक विभाग -से अमिषा साहू ने सर्वाधिक दिन आकर अपना उपहार प्राप्त किया। मुख्य अतिथि श्री हेम प्रकाश गौरहा जी ने भैया-बहनों के उज्जवल भविष्य की कामना कर शुभकामनाएं दी। प्राचार्य पंकज प्रधान जी ने भैया-बहनों को सतत आगे बढ़ते रहने का उपदेश देते हुए कहा कि परिश्रम से ही व्यक्ति आगे बढ़ सकता है और हमेशा आगे बढ़ते रहने का

प्रयास करना चाहिए। प्रबंधसमिति के अध्यक्ष, सचिव एवं अन्य पदाधिकारीयों ने भैया-बहनों को आशीर्वाद देकर उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। उक्त परीक्षा परिणाम की जानकारी परीक्षा प्रमुख संजय कुमार नवल ने दी।

पटना - सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पटना का वार्षिक परीक्षा परिणाम घोषित हुआ इसमें बच्चों का शानदार प्रदर्शन रहा कक्षा अरुण में सौम्या 97.33% उदय में ज्योति पटवा 97% अंक लाकर टॉप किया कक्षा प्रथम में अभिषेक साहू 92% कक्षा द्वितीय में वासु रजक 93% कक्षा तृतीय में किशन सिंह 97.5% कक्षा चतुर्थ में विवेक साहू 97.5% कक्षा षष्ठ में कुश कुमार सोनी 82.5% सप्तम में पीहू यादव 88.66%नवम में सौरभ गुप्ता 98.16% एकादश में शब्द गुप्ता 80.4% अंक प्राप्त कर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया छात्रों को विद्यालय समिति के कोषाध्यक्ष श्री कृष्ण मुरारी गुप्ता व्यवस्थापक श्री मनोज कुमार अग्रवाल एवं अवधेश श्रीवास्तव के द्वारा बच्चों सहित अभिभावको को मुंह मीठा करा कर मेडल सहित तिलक चंदन से सम्मानित कर अंकसूची प्रदान किया गया एवं प्रबंधन समिति द्वारा बच्चों को उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दी।

तिलक नगर बिलासपुर- सरस्वती शिशु मंदिर तिलकनगर में इस वर्ष भी छत्तीसगढ़ राज्य के आदिवासी बहुल क्षेत्र से आए छात्र-छात्राओं का विशेष शिक्षण वर्ग चल रहा है। इसमें कक्षा 10 वीं 12 वीं के बच्चों को विज्ञान, गणित इंग्लिश का नि शुल्क अध्यापन कराया जा रहा है।

स्कूल के पूर्व आचार्य इंग्लिश ग्रामर के प्रति रुचि जागृत कर रहे हैं। उन्होंने बेसिक ग्रामर से संबंधित जानकारी देते हुए बताया कि आज के व्यवसायिक समय में किसी भी निजी संस्थान, कारपोरेट सेक्टर कंपनी में नौकरी पाने के लिए अच्छी गुणवत्ता की स्पीकिंग इंग्लिश बोलना जरूरी माना जाता है। हमें अपनी मातृभाषा हिंदी को अपने ह्दय में रखना चाहिए। हिन्दी हमारी पहचान है लेकिन व्यवसायिक दृष्टि से पूरी दुनिया में इंग्लिश लेग्वेज का ज्यादा महत्व है। इन मेधावी छात्र-छात्राओं को विभिन्न स्कूलों के शिक्षक निशुल्क अध्यापन दे रहे है।

यदुनंदन नगर बिलासपुर -सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, यदुनंदन नगर, तिफरा में 30 अप्रैल को वार्षिक परीक्षा परिणाम घोषित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन व सरस्वती वंदना से हुआ। प्राचार्या सुधा श्रीवास्तव ने बताया कि कुल 197 में से 190 छात्र उत्तीर्ण हुए व 7 पूरक रहे। परीक्षा परिणाम 96.44% रहा। समिति सचिव डॉ. सुशील श्रीवास्तव ने विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दीं। कक्षाओं के टॉपर्स को शील्ड व अंकसूची देकर सम्मानित किया गया। सर्वाधिक उपस्थिति के लिए प्राची सूर्यवंशी (पंचम) व पूर्वी सागर (पष्ठ) को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन आचार्यगण व कर्मचारियों के सहयोग से हुआ। अंत में प्राचार्या द्वारा आभार व्यक्त किया गया।

अकलतरा- सरस्वती शिशु मंदिर अकलतरा का वार्षिक परीक्षा परिणाम 30 अप्रैल को विद्यालय में जारी किया गया। सरस्वती वन्दना पश्चात अतिथि परिचय विद्यालय के प्राचार्य केशव कुमार कौशिक ने कराया। मंचस्थ अतिथि कोषाध्यक्ष ओमप्रकाश साहू, सेवानिवृत्त प्राचार्य जीडी रात्रे, ओम ने विद्यार्थियों को मन लगाकर पढ़ाई करते हुएएअपने माता पिता गुरुजनों का आज्ञा पालन

करते हुए जीवन में सफलता की ऊंचाई प्राप्त करने की शुभकामनाएं दी। कक्षा अरुण से एकादश तक अपनी अपनी कक्षाओं में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त किए विद्यार्थियों को अतिथियों के द्वारा अंक पत्रक प्रदान किया गया।

संचालन परीक्षा प्रमुख सत्या सिंह ने किया। कार्यक्रम में उपस्थित अतिथि अभिभावक, छात्रों का आभार ज्ञापन प्राचार्य केशव कुमार कौशिक ने किया। सभी कक्षाचार्य अपनी-अपनी कक्षा के छात्रों को अंक पत्रक वितरित किए। गृह परीक्षा में विद्यालय का कुल परीक्षा परिणाम 98.32 प्रतिशत रहा। प्राचार्य ने उपस्थित छात्रों से ग्रीष्मावकाश में प्रतिदिन अगली कक्षा के पाठ्य पुस्तक का अध्ययन करने, सुंदर एवं शुद्ध लेखन, गीत, कहानी, कविता, यात्रा संस्मरण एक पेज लिखने अपनी अभिरुचि के कार्य करने तथा अनावश्यक गर्मी में घर से बाहर न निकलने का आग्रह किया। नवीन शिक्षा सत्र में नवीन ऊर्जा के साथ उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम प्राप्त करने, सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास करने का आग्रह किया।

जांजगीर -चांपा - सशिमं नैला का वार्षिक परीक्षा परिणाम 30 अप्रैल को घोषित किया गया। उक्त कार्यक्रम में वीणापाणि शिक्षण समिति के सचिव मन्मथनाथ शर्मा, उपाध्यक्ष ऋषि टहलानी एवं सेवानिवृत्त प्राचार्य संतोष दुबे अतिथि रहे। इस अवसर पर श्री टहलानी ने कहा कि परीक्षा में ज्यादा अंक प्राप्त कर लेने पर परीक्षार्थी अपने पर गुमान न करें बल्कि आगे क्या करना है वो सोचें और जिनका अंक कम आया हो वो कमी को ध्यान में रखते हुए तैयारी में जुट जाएं। संतोष दुबे, मन्मथनाथ शर्मा ने भी आशीर्वाद दिया। परीक्षा प्रमुख आचार्य शैलेश कुमार विश्वकर्मा ने परीक्षा परिणाम घोषित किया। उन्होंने बताया कि 97 प्रतिशत भैया-बहन सफल हुए शेष भैया-बहन को पूरक की पात्रता मिली है। परीक्षा परिणाम में अरुण कक्षा से रूद्रकुमार प्रथम, दिव्यांशु द्वितीय, रंजीता दास तृतीय, कक्षा उदय में आरती हंसराज प्रथम, शालिनी सूर्यवंशी द्वितीय, पीह चौरसिया व डिम्पल यादव तृतीय, कक्षा प्रथम से पल्लवी यादव प्रथम, रिया प्रधान द्वितीय, कनक श्रीवास व सुप्रिया चौहान तृतीय, कक्षा द्वितीय में धरा राठौर प्रथम, अनुराग आनंद द्वितीय, सोनम यादव तृतीय, कक्षा तृतीय के प्रियांशी राठौर प्रथम, संस्कृति राठौर द्वितीय, गौरव चंदेल व प्रकृति सूर्यवंशी तृतीय, कक्षा चतुर्थ में दामिनी रात्रे प्रथम, आयुषी यादव द्वितीय, शताक्षी थवाईत तृतीय, कक्षा पष्ठ में भावीश्री देवांगन प्रथम, पृथा राठौर द्वितीय, प्रिंसी लाठिया तृतीय, कक्षा सप्तम से अभिनव खुटे प्रथम, प्राची यादव द्वितीय, शुभम कौशिक तृतीय, कक्षा नवम में आरती साह प्रथम, माही गोस्वामी द्वितीय, गौरव साहू तृतीय, इसी तरह कक्षा एकादश में रूपाली तिवारी प्रथम, विभा राठौर द्वितीय, नम्रत्ता साहू तृतीय स्थान पर रही। अतिथियों ने प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त भैया-बहनों को अंकपत्रक एवं पुरस्कार से सम्मानित किया गया। प्राचार्य भगवान दास वैष्णव ने शुभकामनाएं दी।

बिलासपुर पाली -आदिवासी जनजातीयो का पर्व त्योहार प्राकृतिक, वैज्ञानिक, फसलीय होते है इनके ज्यादातर पर्व फसल बोने के पूर्व से फसल कटने तक एक श्रृखला के रूप मे चलते है आखातीज (अक्ति तिहार) धूप मे प्रकृति को शांत करने के लिए आदिवासी जनजातीय समाज अपने पूर्वजो एवं पीतरों को अक्ति पानी अर्पित करते है खेती कार्य का प्रारंभ के पहले पेजिया दाई, ठाकुर देव ग्राम्य पेन शक्तियो का गुड़ी पेन ठाना मे सेवा गोगो अरजी की जाती है गोन्डी पुनेम के मानने वाले प्रकृति पूजक आखातीज बीज पंडुम को नव वर्ष के रूप मे भी मनाते है जमीन मे हल चलाने , धान की बोवाई एवं सिचाई कार्य का स्वांग करते हुए सियारी खरीफ फसल के अच्छे पैदावार की कामना की जाती है गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी बड़ादेव शक्तिपीठ पाली में मुठवाल भूमक दुष्यंत उईकाल द्वारा पूरे समाज की सुख शांति समृद्धि हेतु सेवा अरजी गोगो किया गया।

शर्मा ने सभी मेधावी भैया-बहनों को पुरस्कार प्रदान कर सभी का उत्साहवर्धन करते हुए सभी की उज्ज्वल भविष्य की कामना की अपने आशीर्वचन में उन्होंने कहा कोई भी परीक्षा अंतिम नही होती । बच्चों को अपने भविष्य संवारने के अनेकानेक रास्ते खुले हैं। अच्छी संगति, ईमानदारी के साथ उच्च विचार जरूरी है कार्यक्रम को दिलीप कुमार तिवारी व राजेश मिश्रा ने भी संबंधित किया। आज के कार्यक्रम में विद्यालय के समस्त आचार्य परिवार के साथ काफी संख्या में अभिभावक मौजूद थे। कार्यक्रम का संचालन दिव्या भारती व आभार प्रदर्शन प्राचार्य मीरा साहू द्वारा हुआ।

लोरमी- सरस्वती शिशु मंदिर लोरमी में अध्यनरत छात्र गगन सिंह ने हाईस्कूल परीक्षा में छत्तीसगढ़ के मेरिट सूची में 9 वां स्थान प्राप्त किया है। ग्राम सारधा निवासी विष्णुराम-सुनीता के पुत्र गगन सिंह ने दसवीं में 600 में से 587 अंक अर्जित कर 97.83 अंक प्राप्त किया है। छात्र ने मेरिट में स्थान बनाकर जिला ही नहीं लोरमी विधानसभा और अपनी स्कूल संस्था तथा माता-पिता का नाम रोशन किया है। छात्र के इस उपलब्धि पर लोरमी विधायक एवं उपमुख्यमंत्री अरुण साव उनके घर पहुंचे और गगन और उसके माता-पिता तथा परिजनों को मिठाई खिलाकर बधाई दी। सशिमं के वैभव पांडे अध्यक्ष सुरेश जायसवाल और प्राचार्य रामप्रसाद राठौर ने भी छात्र को आशीर्वाद प्रदान किया। इसी स्कूल के कक्षा दसवीं में अध्यनरत ग्राम नवरंगपुर निवासी शिक्षक संजय लोनिया एवं उषा देवी के सुपुत्र अनुराग लोनिया ने भी 97.50 प्रतिशत अंक प्राप्त कर क्षेत्र और संस्था का नाम रोशन किया है। लोनिया समाज के अध्यक्ष रामधुन लोनिया सहित अन्य पदाधिकारी एवं विद्यालय परिवार ने आशीर्वाद प्रदान कर छात्र के उज्जवल भविष्य की कामना की है।

पत्थलगांव -नगर के हृदय स्थल में स्थित सरस्वती शिशु मंदिर समिति पत्थलगांव के द्वारा पृथक से आदर्श शिशु वाटिका संचालित, नई शिक्षा नीति के तहत फाउंडेशन स्टेज की कक्षा प्रारंभ की गई है, उस स्टेज की कथा अरुण (केजी-1), उदय (केजी-2) व प्रभात का परीक्षा परिणाम की घोषणा का कार्यक्रम सभा कक्ष में आयोजित किया गया।

सर्व प्रथम मंचासीन अतिथियों के द्वारा माँ सरस्वती, भारत माता की प्रतिमा पर दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया, आदर्श शिशु वाटिका में संचालित अरुण, उदय व प्रभात कक्षा के परीक्षा परिणाम की घोषणा विद्यालय समिति के सम्मानीय अध्यक्ष, सुनील अग्रवाल (भाजपा जिला उपाध्यक्ष जशपुर) के द्वारा की गई, उन्होंने आशीर्वाचन देते, हुए सभी बच्चों के उज्जवल भविष्य की कामना की तथा परीक्षा परिणाम की प्रशंसा की, समिति के संरक्षक मा. राजेन्द्र प्रसाद अग्रवाल जी ने वर्तमान शिक्षा पद्धति को अवगत कराया और शिशु मंदिर द्वारा की जाने वाली योजना पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अग्रेजी शिक्षा शिशु मंदिर के पाठ्यक्रम में अनिवार्य है, उन्होंने सारगर्भित शब्दों में कहां की सरस्वती शिशु मंदिर शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बच्चों का सर्वांगीण विकास करना है, समिति के संरक्षक मा.मुरारीलाल अग्रवाल जी, जिला संघ चालक ने कहा की बच्चों में शिक्षा के साथ-साथ, अनुशासन, संस्कार का गुण भी अनिवार्य होना चाहिए, तभी बच्चा निष्ठावान गुणवान की श्रेणी में आता है. माता-पिता की भी इसमे अहम भूमिका होती है, परीक्षा परिणाम का टॉप टेन सूची कक्षा अरुण साक्षी यादव 99 प्रतिशत प्रथम, इनायत परवीन 98 प्रतिशत द्वितीय, दिव्यांशी सिदार 98 प्रतिशत द्वितीय, शिवा सक्सेना 97 प्रतिशत तृतीय, नवाजिस अंसारी 97 प्रतिशत, कुश यादव 96 प्रतिशत अर्थव रजक 95 प्रतिशत, सोहम मण्डल 94 प्रतिशत, खुशी कुमारी 93 प्रतिशत, कान्हा गुप्ता 92 प्रतिशत, दिव्यांश कुमार साहू 91 प्रतिशत, अरमान खान 10 प्रतिशत, कक्षा उदय -रूही राठिया 99.66 प्रतिशत प्रथम, पूर्वी राठिया 99.33 प्रतिशत द्वितीय, निशांत रजक 98.33 प्रतिशत तृतीय, इतिश्री साहू 97.33 प्रतिशत, अर्थव अग्रवाल 97 प्रतिशत,

आर्यन चौहान 96.66 प्रतिशत, सिद्धार्थ यादव 96.66 प्रतिशत, नीतू यादव 96.33 प्रतिशत, फहजान 96 प्रतिशत, रूद्र चौधरी 96 प्रतिशत, सपना यादव 95.66 प्रतिशत, अभिनव राठिया 95.66 प्रतिशत, चांदनी मरकाम 95 प्रतिशत, आरती शर्मा 95 प्रतिशत, अरीना नरगिस 95 प्रतिशत, कक्षा प्रभात भाव्या भगत 99.6 प्रतिशत प्रथम, गौरव सोनी 97.66 प्रतिशत द्वितीय, शिवांश पाणिग्रही 96.33 प्रतिशत तृत्तीय, मन्नत परवीन 96 प्रतिशत, यशोदा राठिया 96 प्रतिशत, साहिल राठिया 94.44 प्रतिशत, विद्यालय समिति के मा. व्यवस्थापक प्रयागराज अग्रवाल जी ने दीदियों के द्वारा किए गए परिश्रम की प्रशंसा की। कार्यक्रम के अंत में विद्यालय के प्राचार्य संतोष कुमार पाढ़ी ने आगामी योजना की जानकारी से अभिभावकों को अवगत कराया, बच्चों के शिक्षा के प्रति विशेष ध्यान आकर्षण के लिए प्रेरित किया, धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कार्यक्रम समाप्ति की घोषणा की।

बलौदाबाजार- स्थानीय विद्यालय सरस्वती शिशु मंदिर बलौदाबाजार में सरस्वती शिक्षा संस्थान जिला बलौदाबाजार के जिला प्रतिनिधि व स्थानीय विद्यालय संचालन समिति के उपाध्यक्ष खोड़सराम कश्यप एवं सचिव राज नारायण केसरवानी तथा प्रबंधकारिणी सदस्य जामवंत वर्मा के आतिथ्य में वार्षिक परीक्षा फल घोषित किया गया। अतिथियों के दीप प्रज्वलन के पश्चात प्राचार्य त्रिलोचन साहू ने परीक्षा फल घोषित करते हुए कहा कि विद्यालय में बोर्ड कक्षाओं को छोड़कर 468 छात्र-छात्राओं में 464 सभी छात्र सम्मिलित हुए। जिनमें 95.94% सभी छात्र उत्तीर्ण रहे। कक्षा अरुण में प्रथम स्थान पर दिगेश्वरखूंटे 92.3 प्रतिशत, उदय में प्रथम कुलदीप अनंत 95.3%, प्रथम में प्रथम छाया अवढेलिया 97% प्रतिशत कक्षा द्वितीय में प्रथम दृष्टि साहू 94.5न, कक्षा तृतीय में प्रथम अंकित वर्मा 92.5%, चतुर्थ में प्रथम निहारिका धीवर 95% पंचम में प्रथम जाह्नवी माहौर 90.5, कक्षा पष्ठ में प्रथम रोहिणी वर्मा 94%, सप्तम में प्रथम पवन ढीमर 96.5%, अष्टम में प्रथम हेमा बंजारे 90.8 3न, नवम में प्रथम अंकिता टंडन 92त्न एवं एकादश में प्रथम रश्मि बंजारे 90.8 प्रतिशत रहा। विद्यालय संचालन समिति के अध्यक्ष विजय केसरवानी सचिव राज नारायण केसरवानी, उपाध्यक्ष सहसचिव श्रीमती नीलम सोनी, कोषाध्यक्ष ने उत्तीर्णे छात्र-छात्राओं को अपनी शुभकामनाएं दी।

बिलासपुर- सरस्वती शिशु मंदिर तिलकनगर से शिवरामा चौधरी 40 साल सेवा के बाद रिटायर हो गए। उनकी सेवानिवृत्ति पर पूर्व छात्र, पूर्व आचार्य और वर्तमान शिक्षक स्टाफ ने सम्मानित किया। इस अवसर पर समिति के कोषाध्यक्ष नेतराम सैनिक, पुरषोत्तम अग्रवाल, बृज कुमार चौधरी आदि मौजूद थे। इधर पूर्व छात्र और पूर्व आचार्य की ओर से संस्कार श्रीवास्तव ने उनके घर जाकर सम्मानित किया।

पत्थलगांव -सरस्वती शिशु मंदिर उच्च. माध्य. विद्यालय पत्थलगांव में सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ प्रांत के योजनानुसार रायगढ़ विभाग के प्रबंधकारिणी/ अध्यक्ष, व्यवस्थापक, कोषाध्यक्ष, प्राचार्य, प्रधानाचार्य सभी का एक दिवसीय सम्मलेन आयोजित हुआ । मचासीन अतिथियों द्वारा विद्या की देवी मां सरस्वती, ॐ, मां भारती की प्रतिमा पर दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया । छत्तीसगढ़ प्रांत के प्रादेशिक सचिव श्रीमान विवेक सक्सेना जी, संगठन मंत्री डॉ देवनारायण साहू जी, प्रांतीय कोषाध्यक्ष एवं रायगढ़ विभाग प्रभारी श्रीमान कमल अग्रवाल जी, श्री एल. पी. कटकवार जी विभाग प्रमुख रायगढ़ विभाग, वीरेंद्र विश्वकर्मा जी विभाग समन्वयक, पत्थलगांव विद्यालय का प्रादुर्भाव के साथ 43 वर्षों से विद्यालय के मार्गदर्शन देने वाले वतर्मान संरक्षक राजेन्द्र प्रसाद अग्रवाल जी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। रायगढ़ विभाग के 19 विद्यालयों से प्रबंधकारिणी प्राचार्य, प्रधानाचार्य उपस्थित थे, प्रादेशिक सचिव विवेक सक्सेना जी विद्यालय गुणवत्ता विकास में समिति की भूमिका एवं शैक्षिक गुणवत्ता में प्राचार्य प्रधानाचार्यों की भूमिका पर ध्यान केंद्रित करते

हुए सभी का मार्गदर्शन किया, उन्होंने विद्यालय समिति के व्यक्तियों को शिक्षाविद्, आर्थिक जानकार, वतर्मान समय के आधारित नवीन तकनीकी कंप्यूटर, स्मार्ट प्रोजेक्टर आदि की जानकारी रखने का मार्गदर्शन किया। अधिकारियों ने शैक्षिक गुणवत्ता, कौशल विकास, छात्र संख्या वृद्धि, विषयों के उन्नयन एवं विद्याथियों में राष्ट्रीयभाव की जागृति विषयों का मार्गदर्शन किया। श्री एल. पी कटकवार जी ने विगत 5 सत्रों के दशम एवं द्वादश कक्षा के परीक्षा परिणाम को प्रोजेक्टर के माध्यम से तुलनात्मक अध्ययन कराया । श्री कमल अग्रवाल जी ने भी प्रोजेक्टर के माध्यम से विगत 10 वर्षों के छात्र संख्या का तुलनात्मक दृष्टिकोण के साथ मार्गदर्शन दिया। कार्यक्रम के समापन सत्र में संगठन मंत्री डॉ देवनारायण साहू जी ने सामाजिक समरसता, स्वदेशी का भाव, कुटुंब प्रबोधन, राष्ट्रीय चरित्र, स्व का बोध आदि विषयों पर विस्तारपूर्वक मार्गदर्शन किया, विद्याथिर्यो के कौशल विकास, विद्यालयों का शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम पर ध्यान केंद्रित करने, हिंदी, गणित, अंग्रेजी शिक्षण उन्नयन में प्राचार्य, प्रधानाचार्यों की सतत भूमिका पर ध्यान आकृष्ट करते हुए मार्गदर्शन दिया।

अंबिकापुर- सरस्वती शिशु मंदिर देवीगंज का गृह वार्षिक परीक्षा परिणाम व पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन बुधवार को हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वैज्ञानिक डा प्रशांत शमां एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में जिला विभाग समन्वयक राजेश मिश्र व दिलीप कुमार तिवारी अभिभावक प्रतिनिधि मंच पर आसीन थे।

विद्यालय के प्राचार्य मीरा साहू ने अतिथि परिचय व कार्यक्रम की प्रस्तावना व औचित्य पर प्रकाश डाला। परीक्षा प्रमुख अफसाना परवीन व संचालक दिव्या भारती ने अरूण से एकादश तक स्थानीय परीक्षा परिणाम सांख्यिकी व स्थान प्राप्त मेधावी छात्रों की जानकारी दी। अरुण से चतुर्थ के सभी बच्चों का परिणाम ए ग्रेड के साथ उत्कृष्ट रहा। पांचवी कक्षा का परीक्षा परिणाम भी सराहनीय रहा। छठवीं में शशि यादव 93 प्रतिशत लाकर प्रथम, आदित्य सोनो 81.5 प्रतिशत लाकर द्वितीय व तृतीय स्थान साक्षी गाटव 87.5 प्रतिशत को मिला। सातवीं मव रिहाशी कंवर 92.8 प्रतिशत प्रथम, रामशरण सिंह 10.3 प्रतिशतदितोग व संकृता चमां 87 5 प्रतिशत तीसरे स्थान पर रहे। आठवीं बोर्ड परीक्षा में संध्या गादव 95 प्रतिशत अंक के साथ पहला स्थान प्राप्त किया तथा दूसरे स्थान पर गौरव तिवारी 933 प्रतिशत एवं प्रकाश देहरी व रिषभ जागसवाल 9017 प्रतिशत साकर तीसरे स्थान पर रते। उ मा विभाग में नवमी कक्षा में खुशी फरवरी 93 प्रतिशत के साथ प्रथम रहीं, यहीं सुप्रिया गुप्ता 92.8 प्रतिशत द्वितीग व साक्षी मेढके 11 प्रतिशत के साथ तृतीय स्थान को प्राप्त किया। एकादश विज्ञान संकाय से समोक्ष त्रिपाठी 188 प्रतिशत, ज्योति सुभाकर 852 प्रतिशत, रश्मि तिवारी 79.8 प्रतिशत अंक के साथ क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय रहे। कला व वाणिज्य संकाय से सुजाता साहू 44 प्रतिशत प्रथम, आशीष चौधरी 82.4 प्रतिशत द्वितीय व तीसरे स्थान वंशिस सेंगर 75 प्रतिशत रहीं। मुख्य अतिथि प्रशांत शमां ने सभी मेधावी छात्र-छात्राओं को पुरस्कार प्रदान कर सभी का उत्साहवर्धन करते हुए सभी के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने कहा कि कोई भी परीक्षा अंतिम नहीं होती। बच्चों को अपना भाग्य संवारने के अनेकानेक रास्ते खुले हैं। अच्छी संगति, ईमानदारी के साथ उच्च विचार जरूरी है कार्यक्रम को दिलीप कुमार तिवारी व राजेश मिश्रा ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम में विद्यालय के समस्त आचार्य परिवार के साथ काफी संख्या में अभिभावक मौजूद थे।कार्यक्रम का संचालन दिव्या भारती व आभार प्रदर्शन प्राचार्य मीरा साहू ने किया।

उन्होंने कहा कि सरस्वती शिशु मंदिर नित नए आयाम को छू रहा है। यहां के बच्चे पढ़ाई के साथ अपनी संस्कृति को भी बान्धने में अहम भूमिका निभा रहे हैं। सरस्वती शिशु मंदिर के बच्चों की एक अलत पहनान समाज में हो रही है इसे कायम रखने का काम हम सब मिलकर निरंतर कर रहे हैं।

बिल्हा –सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बिल्हा के स्थानीय कक्षाओं का परीक्षा परिणाम माननीय श्री गोरखनाथ जी अग्रवाल अध्यक्ष सरस्वती बाल कल्याण समिति बिल्हा के मुख्य आतिथ्य एवं माननीय श्री बजरंग अग्रवाल कोषाध्यक्ष, श्री विश्वनाथ जी गोस्वामी की गरिमामयी उपस्थिति में व्यवस्थापक श्री महेश माखीजा जी की सहमति से प्राचार्य श्री नरेश कुमार पाण्डेय द्वारा कक्षा अरूण से एकादश का परिणाम घोषित किया गया। सभी कक्षाओं का परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा। अरूण कक्षा से प्रथम सोमेन्द्र कुरें द्वितीय नितिन कुमार गेंदले तृतीय मीनाक्षी तिवारी उदय कक्षा से प्रथम प्रतीक कोशले द्वितीय भावनी यादव तृतीय आशीष कुमार साहू प्रथम कक्षा से प्रथम सौम्या डहरिया द्वितीय अनामिका कैवर्त तृतीय युवराज राजपूत द्वितीय कक्षा से प्रथम आयुष चौबे द्वितीय पूर्वी वर्मा तृतीय जसवीर जांगड़े तृतीय कक्षा से प्रथम रिया कुमारी रात्रे द्वितीय वेदांत चौवे तृतीय यूक्ती कौशिक चतुर्थ कक्षा से प्रथम सारिका मिश्रा द्वितीय गजेन्द्र सिंह मार्को तृतीय हर्ष साहू षष्ठ कक्षा से प्रथम कृति कांगड़े द्वितीय दीक्षा खूँटे तृतीय फणीन्द्र साहू सप्तम कक्षा से प्रथम प्रीति डहरिया द्वितीय प्रियांशी राजपूत तृतीय रिया कुमारी बांधे नवम कक्षा से प्रथम तन्मय शर्मा द्वितीय तुषार गिरी गोस्वामी एवं साहिल महिलांगे तृतीय धनंजय देवांगन एकादश कक्षा से प्रथम अवि शर्मा द्वितीय मानसी सिंह तृतीय चंचल गोस्वामी ने स्थान प्राप्त किए हैं। इन भैया बहिनों को सरस्वती बाल कल्याण समिति विल्हा के सौजन्य से प्रतिक चिन्ह द्वारा सम्मानित किया गया। साथ ही विद्यालय के शांत, सभ्य और कुशल आचार्य श्री मनहरण लाल जी घोषले के अनवरत 16 वर्षों की सेवा पश्चात् सेवा निवृत्ति पर सरस्वती वाल कल्याण समिति द्वारा शॉल, श्रीफल एवं प्रतीक चिन्ह से आत्मीय सम्मान किया गया। श्री घोषले जी ने अपने सेवाकाल का अनुभव एवं मार्गदर्शन करते हुए कहा कि मुझे अपनी सेवा के दौरान संस्था मे बहुत ही अच्छा लगा। यह विद्यालय समाज, संस्कार एवं पढ़ाई की दृष्टि से सर्वोत्तम है। कार्यक्रम में उपस्थित अभिभावक श्री विश्वनाथ गोस्वामी जी ने अपने उद्बोधन में समस्त अभिभावकों से आग्रह करते हुए कहा कि जिस प्रकार शिक्षकगण मेहनत करते हैं उसी तरह हमें भी अपने पाल्य को अध्ययन के लिए ध्यान देकर प्रेरित करने की आवश्यकता है।

छुरा –सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, छुरा म बार्षिक परीक्षा फल 2025 सुनाए गिस अउ ईस्कुल डेरेस बछर 2023-2024 बॉटे गिस। कारियकरम म माई पहुँना के रूप म तुकेश्वरी थानसिंग निषाद (अधियक्ष, नगर पंचायित छुरा), अधियक्षता चित्ररेखा ध्रुव (सभापति) अउ बाकी पहुँना मन म रजनी लहरे (सभापति), संगीता दीक्षित (पारषद), गरिमा ध्रुव (सभापति, नगर पंचायित, छुरा) अउ विद्यालय के संचालन समिति के अधियक्ष विजय गुप्ता, बेवस्थापक संतोषी यादव, परचार्य संतोष कुमार वर्मा उपस्थित रहिन।

सबले पहिली माँ भारती अउ सरसती दाई के फोटु के पूजा पाठ कर के विद्यालय के भईया-बहिनी मन के दुवारा वाद्य संगीत के संग म दाई सरसती के बंदना करे गिस। उँखर बाद म आरटीई नि:शुल्क के बछर 2023-24 डहर ते भईया-बहिनी मन त ईस्कुल डेरेस बॉटे गिस। परिक्छा परमुख के दुवारा परचार्य जी त आमंतिरित कर के परिक्छा परणाम 2025 ल भईया-बहिनी मन के बीच म सुनाए गिस । उँखर बाद जम्मों कक्षाचार्य मन अरूण ते एकादश (कता, विज्ञान, गणित संकाय) के इक ले दस ईस्थान लवईया भईया-बहिनी मन के नाव सुनाईस अउ पहुँना मन दुवारा परथम तीन ईस्थान लवईया भईया-बहिनी मन ल मेडल अउ शील्ड परदान करे गिन। विद्यालय् म शत्-परतिशत् उपस्थिति देवईया अरूण ते एकादश (कला विज्ञान, गणित संकाय) के भईया -बहिनी ल सुग्घर भेंट विद्यालय परवार दुवारा दिए गिस।

अरूण कक्षा ले 4 भईया बहिन विभा साहू, पियांशी पटेल, दक्ष पटेल अउ कुनाल ध्रुव (प्रथम), सौरभ ध्रुव

(द्वितीय), भव्यांश साहू (तृतीय), उदय कक्षा ते केयांश कंवर अउ विनय ध्रुव (प्रथम), पूरब यादव अउ शेख जुनैद (द्वितीय), मान्हवी (तृतीय), प्रथम कक्षा (अ) ते निकुंज पटेल (प्रथम), मेघा निर्मलकर (द्वितीय), रूचिका नेताम (तृतीय), प्रथम कक्षा (व) ते परिधी (प्रथम), खेमेश नायक (द्वितीय), भुवांश सिन्हा (तृतीय), द्वितीय कक्षा ले प्रशांत यादव (प्रथम), खुशाल सिंह ठाकुर (द्वितीय), पूर्वाश सिन्हा (तृतीय), तृतीय कक्षा ले चंचल साहू (प्रथम), नैतिक कुमार सूर्यवंशी (द्वितीय). अभिजीत (तृतीय), चतुर्थ कक्षा ले भूमिराज साहू (प्रथम), खिलिका सेन (द्वितीय), प्रियांश सेन (तृतीय), पंचम् कक्षा ले मोक्ष कंवर अउ डिम्पल कंवर (प्रथम), दिपांशु साहू (द्वितीय), डिगेश कुमार (तृतीय), षष्ठ कक्षा ले प्राची पटेल (प्रथम), भिमेश कुमार (द्वितीय), चाणक्य निषाद (तृतीय), सप्तम् कक्षा ते अमनदीप साहू (प्रथम), सोम्या लहरे (द्वितीय), विद्या साहू (तृतीय), अष्टम् कक्षा ले राजीव कुमार सेन (प्रथम), तान्या साहू (द्वितीय), वैशाली कंवर (तृतीय), नवम् कक्षा ले मानसी साहू (प्रथम), अस्मिता साहू (द्वितीय), साक्षी साहू (तृतीय). एकादश कक्षा ले लिपाक्षी साहू (प्रथम), चन्द्रप्रभा (द्वितीय), ईशिका यादव (तृतीय) ईस्थान परास करिन।

कोरिया –छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मंडल द्वारा आयोजित हाई स्कूल परीक्षा 2025 में सरस्वती शिशु मंदिर पटना का परीक्षा परिणाम 100 प्रतिशत रहा कक्षा दशम में कुल 22 छात्र सम्मिलित हुए कक्षा 12 वीं में कुल 14 छात्र सम्मिलित हुए जिसमें सभी छात्र–छात्राएं उत्तीर्ण हुए कक्षा 10 वीं में प्रथम स्थान निकिता साहू 88.66 प्रतिशत द्वितीय स्थान श्रीयांशी सोनी 83.16 प्रतिशत तृतीय स्थान पुष्पा सिंह 80.33 प्रतिशत इसी प्रकार हायर सेकेंडरी परीक्षा में प्रथम स्थान विशाखा 80 प्रतिशत प्रतिशत सत्यम यादव 76.8 प्रतिशत तृतीय स्थान उज्जवला पटवा 76.2 प्रतिशत अंक प्राप्त कर विद्यालय एवं नगर पंचायत पटना का नाम रोशन किया है विद्यालय समिति, प्राचार्य एवं आचार्य ने इन छात्रों को बधाई देकर उनके उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दी है।

तखतपुर– विगत दिवस घोषित प्राथमिक प्रमाण पत्र परीक्षा (5वीं) एवं माध्यमिक प्रमाण पत्र परीक्षा (8वीं) के बोर्ड परीक्षा परिणामों में अपनी शैक्षणिक उत्कृष्टता का परिचय देते हुये तखतपुर नगर की सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक संस्था सरस्वती शिशु मंदिर ने उत्कृष्ट शत प्रतिशत परीक्षा परिणाम प्रदान किया है। संस्था में अध्ययनरत छात्र छात्राओं ने उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम प्रदान करते हुये विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है। कक्षा पंचम में 48 विद्यार्थी परीक्षा में सम्मिलित हुए जिसमे कक्षा में प्रथम स्थान भविष्य पटेल 94.50 प्रतिशत के साथ वही द्वितीय स्थान कामनी कुर्रे 93.50 प्रतिशत एवं तृतीय स्थान राम जायसवाल 92.50 प्रतिशत चतुर्थ स्थान बहिन आरती पटेल 91.50 प्रतिशत पंचम स्थान नवनीत कुमार हिमले 89.50 प्रतिशत अर्जित करते हुए स्थान बनाया वही कक्षा अष्टम में 52 विद्यार्थी परीक्षा में सम्मिलित हुए। जिसका परिणाम शत प्रतिशत रहा। जहां कक्षा में प्रथम स्थान छात्रा काजल पटेल 94.17 प्रतिशत द्वितीय स्थान छात्रा वेदिका देवांगन 93 प्रतिशत तृतीय स्थान पुष्कर सिंह क्षत्री 92.6 प्रतिशत चतुर्थ स्थान केशवकांत साहू 91.17 प्रतिशत पंचम स्थान छात्रा लालिमा कैवर्त 90.83 प्रतिशत अंक प्राप्त करते हुए उल्लेखनीय सफलता प्राप्त किए। इस अवसर पर विद्यालय समिति एवं आचार्य विजयेंद्र देवांगन सहित शिक्षक परिवार के द्वारा समस्त मेधावी विद्यार्थियों को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की गई।

सरसीवां– कमल नयन बाल कल्याण समिति सरसीवां द्वारा संचालित सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सरसीवां केंद्रीकृत पूर्व माध्यमिक परीक्षा कक्षा आठवीं में दामिनी साहू पिता रेशम लाल साहू 98.8% अंक लेकर प्रथम स्थान तथा हसिका साहू पिता नरेश कुमार साहू 97.50% द्वितीय स्थान एवं डिंपल यादव पिता प्रदीप यादव 96त्न अंक लेकर दसवां स्थान प्राप्त की

है। तीनों छात्रा प्रारंभ से ही प्रतिभावान छात्रा थी। जिला प्राविण्य सूची में स्थान बनाकर विद्यालय का ही नहीं समूचे जिले का नाम रोशन किया है। पंचम एवं अष्टम का परीक्षा परिणाम सौ प्रतिशत रहा है। प्रबंध समिति के अध्यक्ष रमेश जालान, सचिव डॉ. राकेश दुबे एवं अन्य सभी पदाधिकारी ने इसे गौरवशाली बताया। प्राचार्य पंकज कुमार प्रधान ने तीनों छात्रों को उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है।

सरिया-केंद्रीयकृत परीक्षा परिणाम 2025 में प्राथमिक शाला अमुर्रा कक्षा पांचवीं के बच्चों ने टाप टेन में जगह बनाकर गांव परिवार व विद्यालय का नाम रोशन किया है। विदित हो कि होनहार बालिका कु करिश्मा पटेल पिता नरसिंह पटेल ने 96.50%अर्जित कर टाप टेन सूची में पांचवां स्थान बनाई । इसी तरह होनहार बालक मानव चौहान पिता उपिन चौहान ने 96% अर्जित कर टाप टेन सूची में छठवां स्थान बनाया तथा गणित विषय में 50 पूर्णांक में 50 अंक अर्जित किया। बच्चों की इस उपलब्धि से शालेय परिवार माता पिता परिजन एवं पूरा गांव हर्षित है। उक्त जानकारी देते हुए प्रधान पाठक यदुमणी चौहान ने देते हुए सभी बच्चों को बधाई एवं आशीर्वाद दिया है। तथा बच्चों से यह अपील किया है कि सभी बच्चे समय का सदुपयोग करते हुए कक्षा में ध्यान केंद्रित करें और अच्छे अंक अर्जित करते हुए अपने उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

पत्थलगांव -छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मंडल बोर्ड के द्वारा सत्र 2025 हाई स्कूल, हायर सेकेंडरी परीक्षा परिणाम घोषित किया गया, जिसमें नगर के हृदय स्थल में स्थित क्षेत्र का उत्कृष्ट ख्याति प्राप्त हिंदी माध्यम की सबसे बड़ी शैक्षणिक संस्था सरस्वती शिशु मंदिर उ.मा. विद्यालय पत्थलगांव हाई स्कूल, हायर सेकेंडरी का परीक्षा परिणाम रहा बेहतर, नगर व पोषक ग्रामो में हुई प्रशंसा, शिक्षा के साथ-साथ संस्कार के लिए अग्रणी, पत्थलगांव ब्लॉक, जिला व प्रान्त में बच्चों ने अपना वर्चस्व कायम किया है, कक्षा 10 वीं में कु. अनमोल साहू 94.33% कक्षा में प्रथम स्थान, कुं. रागिनी साहू 92.33% द्वितीय स्थान, कु.निमर्ला पटेल 90.16% तृतीय स्थान, 81 विधार्थी प्रथम श्रेणी, 18 विधार्थी द्वितीय श्रेणी में अपनी सफलता हासिल किया परीक्षा परिणाम 99%, इसी प्रकार कक्षा 12 वीं में 74 विधार्थी प्रथम श्रेणी में, 07 विधार्थी द्वितीय श्रेणी में अपना स्थान यदुमणि यादव 90% कक्षा में प्रथम स्थान, कु. अंकिता प्रधान 89.6% द्वितीय स्थान, आदित्य जायसवाल 87% तृतीय स्थान विज्ञान संकाय जान्हवी यादव 89.2% कक्षा में प्रथम स्थान, पामिनी पैकरा 83.4% द्वितीय स्थान, नीतू बंजारा 82.6% व पूजा साहू 82.6% तृतीय स्थान, वाणिज्य संकाय -पूर्वी अग्रवाल 88.6% कक्षा में प्रथम स्थान, अनन्या पांडे 88.2% कक्षा में द्वितीय स्थान, साक्षी विश्वकर्मा 87%तृतीय स्थान, परिणाम 100% रहा, समिति के समस्त पदाधिकारियों ने बेहतर परीक्षा परिणाम की प्रशंसा करते हुए सभी बच्चों के उज्जवल भविष्य की कामना की, तथा आचार्य व दीदियों के द्वारा किए गए परिश्रम की सराहना की, संस्था के प्राचार्य संतोष कुमार पाढ़ी ने कहा कि परीक्षा परिणाम उत्कृष्ट है, किसी भी बच्चे को निराश होने की कोई जरूरत नहीं है, भविष्य में और परिश्रम की आवश्यकता है जिससे की आप अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सके। छात्रों को प्रोत्साहित करते हुए सभी के उज्जवल भविष्य की कामना की।

बिर्रा -आर्य बाल कल्याण समिति द्वारा संचालित सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बिर्रा का कक्षा दशम् एवं द्वादश परीक्षा परिणाम संतोषप्रद रहा। कक्षा दशम् में राहूल कश्यप 93.16 प्रतिशत के साथ प्रथम स्थान प्राप्त किया। सौम्य देवांगन 92.83 प्रतिशत के साथ द्वितीय स्थान प्राप्त किया। जोया मेमन 92 प्रतिशत के साथ तृतीय स्थान प्राप्त किया। तथा तरुण कश्यप 90.16 प्रतिशत के साथ चतुर्थ स्थान प्राप्त किया। इस प्रकार विद्यालय में कक्षा दशम् का परीक्षाफल प्रतिशत 96.33 प्रतिशत रहा। इसी प्रकार कक्षा द्वादश में सुमित बंजारे 82.8 प्रतिशत के

साथ कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। योगेश कश्यप 81.6 प्रतिशत के साथ कक्षा में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। निकिता साहू 81 प्रतिशत के साथ कक्षा में तृतीय स्थान प्राप्त किया। तथा सविता कश्यप 78.8 प्रतिशत के साथ चतुर्थ स्थान प्राप्त किया। विद्यालय के प्राचार्य ध्रुव कुमार कहार तथा प्रबंधन समिति के पदाधिकारी गण समम्त आचार्य गण ने इन समस्त छात्र छात्राओं को बधाई दी है।

लुडेग – छ.ग.मा. शिक्षा मण्डल रायपुर द्वारा कक्षा 10 वीं एवं 12 वीं का वर्षिक परीक्षा परिणाम घोषित किया गया। स.शि.मं. लुड़ेग का परीक्षा परिणाम 10 वीं में कुल संख्या–66, प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण–66 एवं 12 वीं कुल संख्या–63, प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण–61, द्वितीय श्रेणी उत्तीर्ण–02, उत्तीर्ण शत् प्रतिशत रहा। जिसमें कक्षा 10 वीं में लक्ष्मी यादव 96.5 प्रतिशत अंक लाकर विद्यालय में प्रथम स्थान, ममता यादव 95.6 प्रतिशत द्वितीय स्थान एवं सौम्य पटेल 93.8 प्रतिशत तृतीय स्थान प्राप्त किये हैं। तथा कक्षा 12 वीं में प्रितम यादव 90.6 प्रतिशत अंक लाकर कक्षा में प्रथम स्थान, आयुषी यादव 87 प्रतिशत, सानिया चौहान 87 प्रतिशत, द्वितीय स्थान एवं मुस्कान परवीन 86.2 प्रतिशत, तृतीय स्थान प्राप्त कर भैया/बहनों ने विद्यालय एवं लुड़ेग नगर का मान बढ़ाया है। सभी उत्तीर्ण भैया–बहनों को प्राचार्य एवं आचार्य–दीदीयों, समिति के पदाधिकारी अध्यक्ष, व्यवस्थापक, कोषाध्यक्ष एवं सदस्यों ने भी बधाई दी।

चांपा–सरस्वती शिशु मंदिर, चाम्पा में वार्षिक परीक्षा परिणाम की घोषणा एक भव्य एवं गरिमामय समारोह में की गई। विद्यालय परिसर में आयोजित इस कार्यक्रम में छात्र–छात्राओं, अभिभावकों एवं विद्यालय परिवार के साथ ही अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

दीप प्रज्ज्वलन एवं सरस्वती वंदना से हुआ शुभारंभ कार्यक्रम की शुरुआत परंपरागत रूप से दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुई, जिसे मुख्य अतिथियों ने संयुक्त रूप से संपन्न किया। इसके पश्चात विद्यार्थियों द्वारा सरस्वती वंदना प्रस्तुत की गई, जिससे वातावरण में आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार हुआ। मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट जनों की उपस्थिति इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि समिति के अध्यक्ष हनुमान प्रसाद देवांगन थे। उनके साथ मंच पर सह व्यवस्थापक कमल देवांगन, वरिष्ठ संस्थापक नंदकुमार देवांगन, कोषाध्यक्ष गोपी बरेठ, प्राचार्य अश्विनी कुमार कश्यप, प्रधानाचार्य कृष्ण कुमार पाण्डेय, तथा परीक्षा प्रमुख रामदुलारे प्रजापति उपस्थित रहे। परीक्षा परिणामों की घोषणा विद्यालय के प्राथमिक तथा उच्च विभाग के प्रभारियों ने क्रमवार परीक्षा परिणामों की घोषणा की। विद्यार्थियों की उपलब्धियों की प्रशंसा करते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की गई। प्रेरणास्पद उद्बोधन से इस अवसर पर अतिथियों ने विद्यार्थियों को उत्साहित एवं प्रेरित करते हुए अपने विचार साझा किए। कमल देवांगन ने कहा, सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता। बेहतर परिणाम के लिए सतत प्रयास ही आवश्यक हैं। गोपी बरेठ ने विद्यार्थियों से कठिन परिस्थितियों में भी मन लगाकर पढ़ाई करने का आग्रह किया। नंदकुमार देवांगन ने कहा, हर समय नई चुनौतियाँ सामने आती रहती हैं। ऐसी परिस्थितियों में शिक्षा को हथियार बनाना जरूरी है, जिसके लिए बालक, पालक और शिक्षक–तीनों को सजग रहना 2 होगा। हनुमान प्रसाद देवांगन ने नवीन प्रयोगों को सीखने का माध्यम बताया और कहा, नवाचार के बिना नई उपलब्धियां संभव नहीं हैं। मंच संचालन श्रीमती ललिता तिवारी ने किया। अंत में विद्यालय के प्राचार्य अश्विनी कुमार कश्यप ने सभी अतिथियों, अभिभावकों और सहयोगीगणों के प्रति आभार व्यक्त किया।

विद्यार्थियों का सम्मान

समारोह के अंत में विभिन्न कक्षाओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राओं को पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। पुरस्कार पाकर छात्र–छात्राओं के चेहरों पर गर्व और आत्मविश्वास की चमक देखने को मिली।

अकलतरा– नगर के सरस्वती शिशु मंदिर विद्यालय 2024–25 का वार्षिक परीक्षा परिणाम ओमप्रकाश साहू, दशरथ नामदेव, सेवा निवृत प्राचार्य, जी.डी. रात्रे सेवानिवृत व्याख्याता, अभिभावक, रवि वस्त्रकार राजेंद्र सिंह

अभिभावक के आतिथ्य में घोषित किया गया। सर्वप्रथम अतिथियों द्वारा मां सरस्वती, ॐ भारत माता के चित्रों के समक्ष दीप प्रज्वलन कर दीप मंत्र के साथ पूजन किया गया। सरस्वती वन्दना पश्चात अतिथि परिचय विद्यालय के प्राचार्य केशव कुमार कौशिक ने कराया। जीडी रात्रे, ओम प्रकाश साहू ने विद्यार्थियों को मन लगाकर पढ़ाई करते हुए, अपने माता-पिता, गुरुजनों की आज्ञा पालन करते हुए जीवन में सफलता की ऊंचाई प्राप्त करने की शुभकामनाएं दी। कक्षा अरुण से एकादश तक अपनी-अपनी कक्षाओं में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त किए छात्र-छात्राओं को अतिथियों एवं उपस्थित अभिभावकों के कर कमलों से अंक पत्रक प्रदान किया गया। संचालन परीक्षा प्रमुख श्रीमती सत्या सिंह ने किया। कार्यक्रम में उपस्थित अतिथि, अभिभावक, छात्रों का आभार प्राचार्य केशव कुमार कौशिक ने किया। सर्वे भवन्तु सुखिन मंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ, इसके बाद सभी कक्षाचार्य अपनी अपनी कक्षा के छात्रों को अंक पत्रक वितरित किए। गृह परीक्षाओं में 447 छात्र, 384 छात्रा योग 831 छात्र, छात्राएं उपस्थित हुए और 7 छात्र-छात्राओं अनुपस्थित रहे, जिनमें से 820 छात्र, छात्रा उत्तीर्ण 4 छात्र. छात्रा अनुत्तीर्ण एवं 10 छात्र, छात्रा पूरक हैं, इस प्रकार विद्यालय का कुल परीक्षा परिणाम 98. 32 प्रतिशत रहा। 283 छात्र, छात्राए प्रथम श्रेणी, 320 छात्र, छात्राए द्वितीय श्रेणी, 219 छात्र, छात्राएं तृतीय श्रेणी से परीक्षा उत्तीर्ण हुए। प्राचार्य ने उपस्थित छात्रों से ग्रीष्मावकाश में प्रतिदिन अगली कक्षा के पाठ्य पुस्तक का अध्ययन करने, सुंदर एवं शुद्ध लेखन हेतु गीत, कहानी, कविता, यात्रा संस्मरण एक पेज लिखने, अपनी अभिरुचि के कार्य करने द तथा अनावश्यक गर्मी में घर से बाहर न निकलने का आग्रह किया।

देवभोग- लंकेश्वरी बाल संस्कार समिति द्वारा संचालित सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय देवभोग कक्षा 10वीं एवं 12वीं के बोर्ड परीक्षाओं के परीक्षा परिणाम घोषित हुए जिसमें कक्षा 12वीं का परीक्षा परिणाम 100% व इसी प्रकार कक्षा दसवीं का परीक्षा परिणाम 98.5 रहा।

कक्षा दशम में छात्र भूपेश कुमार नागेश पिता हेमलाल नागेश ने 97. 16% अंक प्राप्त कर पूरे गरियाबंद जिले में प्रथम स्थान प्राप्त कर विद्यालय व क्षेत्र का गौरव बढ़ाया है। इसी प्रकार अविनाश निर्मलकर ने 93.33% अंक प्राप्त कर द्वितीय स्थान व विरेन्द्र नागेश ने 90.66 अंक प्रतिशत प्राप्त कर तृतीय स्थान प्राप्त किया है।

कक्षा 12वीं का इस वर्ष प्रथम बेच था जिसमें बहन रितु यादव ने 84.4% अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान, विदिया वर्मा ने 82.5.8%अंक प्राप्त कर द्वितीय स्थान और तपस्विनी चुरपाल ने 82% अंक प्राप्त कर तृतीय स्थान प्राप्त किया है।

इसी प्रकार कक्षा 12वीं में 41 भैया बहिन परीक्षा में सम्मिलित हुए जिसमें 29 भैया बहनों ने प्रथम स्थान प्रथम श्रेणी व 12 छात्र-छात्राओं ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार कक्षा दशम में कुल 76 भैया बहन सम्मिलित हुए जिसमें 75 भैया-बहन प्रथम श्रेणी से पास हुए।

भैया-बहिनों की इस सफलता पर विद्यालय के प्राचार्य नरेंद्र साहू प्रधानाचार्य मनोज रघुवंशी, कक्षाचार्य लक्ष्मी नारायण कश्यप, ओंकारलेश्वर ठाकुर, तकदीर भारद्वाज व समस्त आचार्य दीदियों एवं विद्यालय संचालन समिति के कोषाध्यक्ष सुचीर भाई पटेल, सचिव तस्मित पात्र, सह सचिव विजय मिश्रा, समिति सदस्य अशोक बजरंग साहू एवं उरमाल शिशु मंदिर के व्यस्थापक जसवंत गोयल ने भी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित की है यह जानकारी विद्यालय के प्रचार-प्रसार प्रभारी आचार्य राजकुमार यादव ने दी।

बिर्रा-आर्य बाल कल्याण समिति द्वारा संचालित सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बिर्रा का वार्षिक परीक्षा 2024-25 का परीक्षाफल घोषित किया गया। सर्वप्रथम समिति के पदाधिकारियों के द्वारा दीप प्रज्ज्वलन किया गया। तत्पश्चात सरस्वती वंदना कर अतिथियों का स्वागत किया गया। प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च व उच्चतर विभाग का परीक्षा परिणाम घोषित किया गया। कक्षा में क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त भैया-बहिनों को मेडल एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर समिति के

पदाधिकारी गण, प्राचार्य, प्रधानाचार्य, आचार्य बंधु भगिनी गण, भैया बहिन एवं अभिभावक गण उपस्थित रहे। संस्कृति ज्ञान परीक्षा में भी आचार्य बंधु भगिनी गण समिति के पदाधिकारी गण को भी प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। विद्यालय के प्राचार्य ध्रुव कुमार कहार ने कहा कि हमारा विद्यालय प्राकृतिक दृष्टि से भी अत्यंत सुंदर व प्रेरित करने वाला है। हम पढ़ाई के साथ-साथ खेल, बौद्धिक आदि विभिन्न विधाएं यहां संचालित करते है। जिससे भैया बहिनों का समुचित विकास हो सके।

बलौदा बाजार -सरस्वती शिशु मंदिर का वार्षिक परीक्षा फल उत्कृष्ट रहा स्थानीय विद्यालय सरस्वती शिशु मंदिर बलौदा बाजार में सरस्वती शिक्षा संस्थान जिला बलौदा बाजार के जिला प्रतिनिधि व स्थानीय विद्यालय संचालन समिति के उपाध्यक्ष आदरणीय खोड़सराम कश्यप एवं सचिव राज नारायण केसरवानी तथा प्रबंधकारिणी सदस्य जामवंत वर्मा के आतिथ्य में वार्षिक परीक्षा फल घोषित किया गया। अतिथियों के दीप प्रज्वलन के पश्चात प्राचार्य त्रिलोचन साहू ने परीक्षा फल घोषित करते हुए कहा कि विद्यालय में बोर्ड कक्षाओं को छोड़कर 468 भैया/ बहनों में 464 भैया बहन सम्मिलित हुए। जिनमें 95.94% भैया/ बहन उत्तीर्ण रहे। कक्षा अरुण में प्रथम स्थान पर दिगेश्वरखूंटे 92.3 प्रतिशत उदय में प्रथम कुलदीप अनंत 95.3%, प्रथम में प्रथम छाया अवढेलिया 97% प्रतिशत कक्षा द्वितीय में प्रथम दृष्टि साहू 94.5%, कक्षा तृतीय में प्रथम अंकित वर्मा 92.5%, चतुर्थ में प्रथम निहारिका धीवर 95% पंचम में प्रथम जाह्नवी माहौर 30.5%, कक्षा षष्ठ में प्रथम रोहिणी वर्मा 94%, सप्तम में प्रथम पवन ढीमर 96.5%, अष्टम में प्रथम हेमा बंजारे 90.8 3%, नवम में प्रथम अंकिता टंडन 92त्न एवं एकादश में प्रथम रश्मि बंजारे 90.8 प्रतिशत रहा ।

विद्यालय संचालन समिति के अध्यक्ष आदरणीय विजय केसरवानी सचिव राज नारायण केसरवानी, उपाध्यक्ष खोड़ासराम कश्यप, सहसचिव श्रीमती नीलम सोनी कोषाध्यक्ष लखेपाल जायसवाल ने उत्तीर्ण भैया -बहनों को अपनी शुभकामनाएं दी ।

मनेन्द्रगढ़- सरस्वती शिशु मंदिर उ. मा. विद्यालय मनेन्द्रगढ़ की स्थानीय कक्षाओं के परीक्षाफल की घोषणा विद्यालय के व्यवस्थापक महेन्द्र जैन के मुख्य आतिथ्य, अभिभावक हरिनाथ सिंह, पूर्व विद्यायक गुलाब कमरो, जे. पी. श्रीवास्तव ट्रेड कोसिल अध्यक्ष एवं अधिवक्ता रामनेरश पटेल के विशिष्ट अतिथ्य में विद्यालय के प्राचार्य दिनेश कुमार मिश्र द्वारा की गई। कक्षा पंचम में वहिन मुस्कान देवांगन, सुरभि एवं हंसिका ने 95 प्रतिशत अंक अर्जित कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। कक्षा अष्टम् में भैया सामर्थ्य पाण्डेय ने 92.3 प्रतिशत अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान, कक्षा 9वीं में बहिन साक्षी रैदास ने 91. 1 प्रतिशत एवं 11वीं में अभिषेक सिंह ने 87 प्रतिशत अंक अर्जित कर प्रथम स्थान अर्जित किया विद्यालय के प्राचार्य एवं व्यवस्थापक द्वारा कक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले भैया-बहनों को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की गई। इस अवसर पर कार्यक्रम के अतिथि महेन्द्र जैन, जे. पी. श्रीवास्तव, गुलाब कमरो एवं हरिनाथ सिंह द्वारा अपने उद्बोधन के माध्यम से सभी भैइया बहनों को अध्ययन के प्रति सतत् जागरूक रहते हुए अधिक से अधिक परिश्रम करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में उपस्थित अभिभावको एवं अतिथियों के प्रति आभार ज्ञापन प्राचार्य दिनेश कुमार मिश्रा द्वारा संचालन आचार्य राकेश पाण्डेय द्वारा किया गया।

कसडोल-स्थानीय सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कसडोल की स्थानीय परीक्षा एवं कक्षा पांचवी तथा आठवीं की केंद्रीकृत परीक्षा का परिणाम घोषित किया गया जो शत प्रतिशत रहा। पूर्व घोषणा अनुसार सरस्वती शिशु मंदिर कसडोल की स्थानीय परीक्षा का परिणाम घोषित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विद्यालय संचालन समिति के अध्यक्ष गंगाप्रसाद साहू, अध्यक्षता विद्यालय के प्राचार्य जयलाल मिश्रा एवं विशेष अतिथि संचालन समिति के सदस्य शांतिकुमार साहू, ललित नारायण साहू, उपमन्यु वर्मा पालो प्रमुख सुरेश कुमार देवांगन एवं आत्मानंद विद्यालय के व्याख्याता के. आर. चंद्राकर रहे।

प्रारंभ में अतिथियों द्वारा मां सरस्वती तथा भारतमाता के छायाचित्र का पूजन अर्चन एवं दीप प्रज्वलन किया गया। तत्पश्चात हाई एवं हायर सेकेंडरी के परीक्षा परिणाम की घोषणा परीक्षा प्रमुख अन्नपूर्णा शुक्ला, पूर्व माध्यमिक के परीक्षाफल की घोषणा लक्ष्मी नारायण साहू तथा शिशु एवं प्राथमिक विभाग के परीक्षा परिणाम की घोषणा प्रहलाद यादव ने की। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विद्यालय के प्राचार्य जयलाल मिश्रा ने सभी सफल विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि परीक्षा में पास होना ही महत्वपूर्ण नहीं है। जीवन जीने के लिए हर क्षेत्र में आगे होना चाहिए, जिसके लिए संघर्ष के पथ पर चलना जरूरी होता है। आगे पढ़ाई के साथ हर बच्चे को सेवा समर्पण, त्याग तपस्या, संस्कृति और संस्कारित शिक्षा की जरूरत है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गंगा प्रसाद साहू ने कहा कि सफलता का एक ही मूल मंत्र है कड़ी मेहनत, खूब पढ़िए और हमेशा आगे बढ़िये। विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित शांति – कुमार साहू एवं उपमन्यु वर्मा ने भी सभी विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दी। कक्षा अरुण से ग्यारहवीं के प्रथम तीन स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को अतिथियों द्वारा रोली तिलक लगाकर स्मृति चिन्ह प्रदान किया। कक्षा पांचवी एवं आठवीं की केंद्रीकृत परीक्षा दिव्यांजलि कैवर्त पिता राजकुमार केवट ने 96 प्रतिशत अंकों के साथ प्रथम स्थान, प्राची पैकरा पिता ललित कुमार पैकरा 95.5 प्रतिशत अंकों के साथ द्वितीय, काव्या साहू पिता धनीराम साहू 92.5 प्रतिशत अंकों के साथ तृतीय स्थान प्राप्त किया। कक्षा आठवीं में लेखा साहू पिता प्रवीन कुमार साहू 94 प्रतिशत अंक के साथ प्रथम, हर्षिता साहू पिता धनीराम साहू 89.67 प्रतिशत अंक के साथ द्वितीय एवं प्रशांत वर्मा पिता विनोद कुमार –– वर्मा 89.17 प्रतिशत अंक के साथ तृतीय स्थान प्राप्त कर विद्यालय को – गौरवान्वित किया है। विद्यालय परिवार द्वारा सभी विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दिया गया। परीक्षा परिणाम जानने सभी विद्यार्थियों सहित अभिभावकों में काफी उत्साह देखा गया। कार्यक्रम का संचालन आचार्य विष्णुप्रसाद केंवट ने किया। इस अवसर पर विद्यालय के सभी शिक्षक शिक्षिकाएं एवं अभिभावक उपस्थित रहे।

डोंगरगढ़ – सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ के तत्वावधान में प्रांतीय प्राचार्यों एवं प्रधानाचार्यों की वार्षिक कार्ययोजना बैठक सम्पन्न हुई।

मुख्य अतिथि जुड़ावन सिंह ठाकुर प्रांतीय अध्यक्ष सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़, अध्यक्षता विवेक सक्सेना प्रादेशिक सचिव, विशेष अतिथि डॉ. देवनारायण साहु संगठन मंत्री तथा विशिष्ट अतिथि कमल अग्रवाल, कोषाध्यक्ष, सुनील जैन तथा सरस्वती शिशु मंदिर के व्यवस्थापक नीलम चोपड़ा, प्रकाश, गिरधर, कोषाध्यक्ष के आतिथ्य में प्राचार्य–प्रधानाचार्य कार्ययोजना का दीप प्रज्जवलन कर शुभारंभ किया गया। काश्मीर में आतंकी हमले के शिकार हुए निर्दोषों को मौन श्रद्धांजलि दी गई।

उल्लेखनीय है कि संपूर्ण छत्तीसगढ़ के शिशु मंदिर के लगभग 300 प्राचार्य एवं प्रधानाचार्य प्रांत स्तरीय अधिकारियों एवं विभाग समन्वयकों के साथ बैठक में आगामी सत्र के लिए सरस्वती शिशु मंदिरों में पूरे वर्ष भर की गतिविधि जैसे संगीत, आध्यात्म, नैतिक, कम्प्यूटर, स्पोकन इंग्लिश तथा गुणवत्तायुक्त शिक्षा उत्कृष्ट लक्ष्य लेकर कार्ययोजना पर चर्चा हुई। गत सत्र में लिए गए लक्ष्य की गुणवत्ता, परिणाम, नए प्रवेश में वृद्धि की समीक्षा कर, नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति विद्यार्थियों एवं आचार्यों की दक्षता को सृजित करना, विद्यालय में उपलब्ध तकनीक एवं संसाधनों को अधिक विकसित करना इत्यादि पर चर्चा हुई। त्रिदिवसीय कार्ययोजना बैठक में क्षेत्र एवं प्रांत स्तरीय वरिष्ठ अधिकारियों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

––––००–––

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक विवेक सक्सेना सचिव सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ रायपुर आयुर्वेदिक कालेज के पीछे 492010 छत्तीसगढ़ द्वारा प्रकाशित एवं स्वास्तिक प्रिंटरी हनुमान मंदिर रोड, पवार सभा भवन के पास, न्यू चंगोराभाठा, रायपुर मो. – 9826446695 से मुद्रित सरस्वती शिक्षा संस्थान रायपुर से प्रकाशित, संपादक – श्री उदय रावले, मई 2025, दूरभाष – 0771-2262770

विविध कार्यक्रम

प्राचार्य, प्रधानाचार्य प्रांतीय कार्ययोजना बैठक डोंगरगढ़

विशिष्ट प्राचार्य प्रशिक्षण वर्ग रायपुर

विशिष्ट प्राचार्य प्रशिक्षण वर्ग रायपुर ।

विशिष्ट प्राचार्य प्रशिक्षण वर्ग, रायपुर

विशिष्ट प्राचार्य प्रशिक्षण वर्ग, रायपुर

विशिष्ट प्राचार्य प्रशिक्षण वर्ग, रायपुर

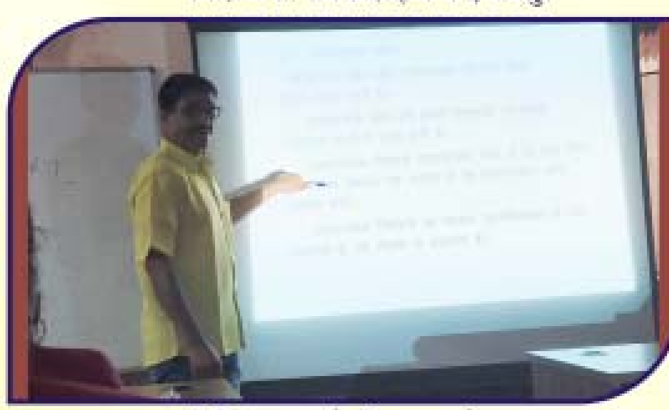

विशिष्ट प्राचार्य प्रशिक्षण वर्ग, रायपुर

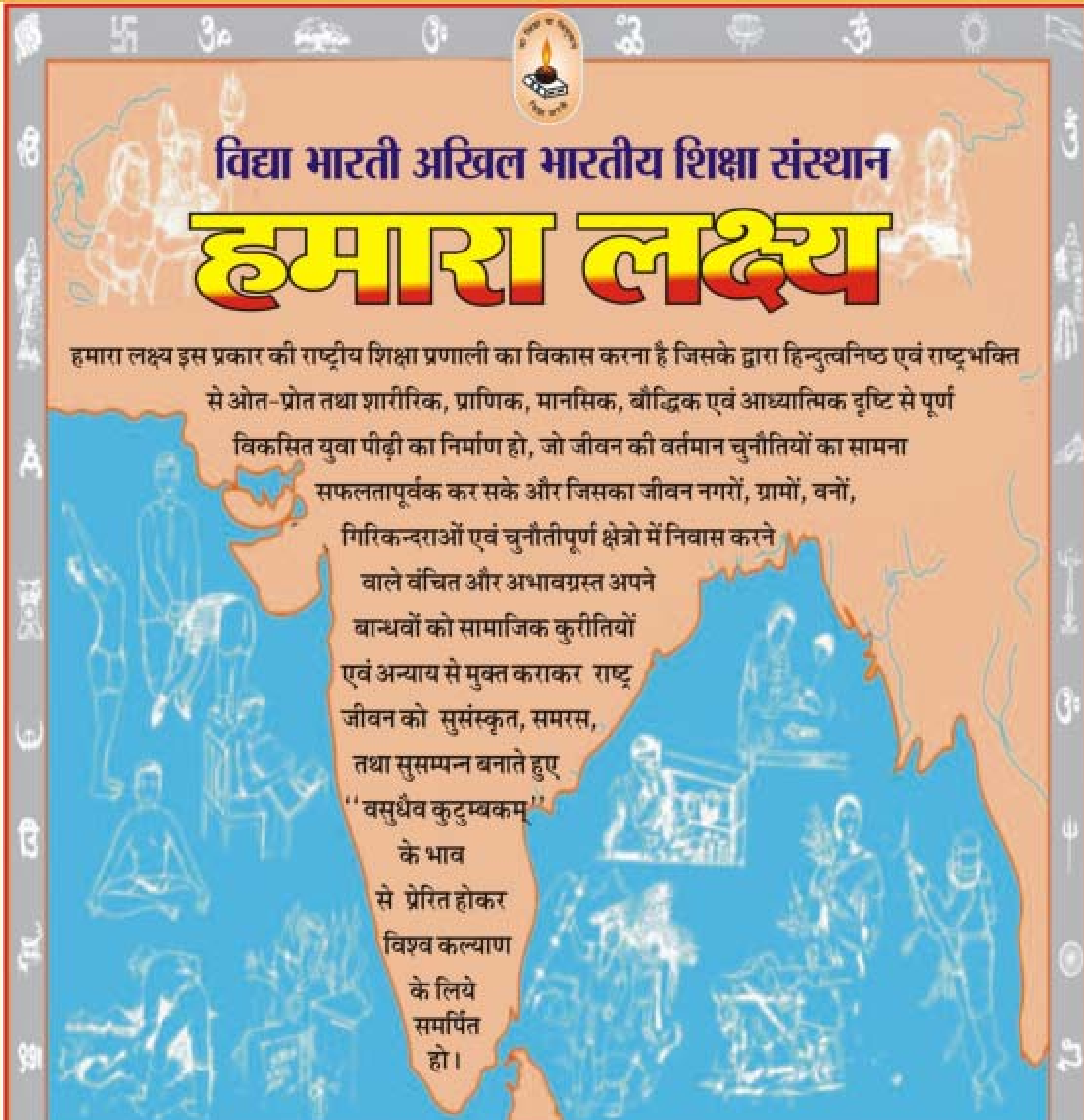

प्रति,

प्रेषक:

सरस्वती शिक्षा संस्थान

आयुर्वेदिक कॉलेज के पीछे, रोहिणीपुरम,

रायपुर (छ.ग.) पिन- 492 010 फोन - 0771-2262770

पिन.

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक विवेक सक्सेना सचिव सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ रायपुर आयुर्वेदिक कालेज के पीछे 492010 छत्तीसगढ़ द्वारा प्रकाशित एवं स्वास्तिक प्रिंटरी हनुमान मंदिर रोड, पवार सभा भवन के पास, न्यू चंगोराभाठा, रायपुर मो. - 9826446695 से मुद्रित सरस्वती शिक्षा संस्थान रायपुर से प्रकाशित, संपादक - श्री उदय रावले, मई 2025, दूरभाष - 0771-2262770